04 - साधु का जादू और राजा का राज

05 - कलाकृतियां, कलाकार एवं भारतीय जनमानस

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 19 जनवरी, 2025

06 - धन्य है धरा जहां मालवा के भगवान आचार्य भगवंत श्री...

07 - समय बदला उसके साथ सिनेमा भी बदला

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-140 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

देवालय

फोटो : गिरीश शर्मा

स्वामित्व योजना से गांव और गरीब होंगे सशक्त, विकसित भारत का सफर होगा सुहाना : प्रधानमंत्री मोदी

*ग्राम स्वराज जमीन पर उतरेगा, ग्राम पंचायतें आर्थिक दृष्टि से होंगी सशक्त, स्वामित्व केवल भू-अधिकार नहीं बल्कि स्वाभिमान का अधिकार - मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि स्वामित्व योजना से गांव और गरीब सशक्त होंगे और विकसित भारत का सफर सुहाना होगा। भारत में पिछले लगभग 5

- **प्रॉपर्टी राइट्स 21वीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती का हल**
- **100 लाख करोड़ से अधिक की आर्थिक गतिविधियों का रास्ता खुलेगा**

वर्ष में डेढ़ करोड़ ग्रामीणों को उनकी संपत्ति का स्वामित्व पत्र (प्रॉपर्टी कार्ड) दिया गया है। आज 65 लाख से अधिक हितग्राहियों को प्रॉपर्टी कार्ड दिया जा रहा है। इस प्रकार देश के लगभग सवा दो करोड़ ग्रामीणों को उनके घर का पक्का कानूनी दस्तावेज मिला है। भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए आज का दिन बहुत ऐतिहासिक है।

प्रधानमंत्री मोदी ने शनिवार को दिल्ली से स्वामित्व योजना अंतर्गत हितग्राहियों को संपत्ति अधिकार पत्रों के ई-वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ कर देशभर के 50 हजार से अधिक गाँवों में 65 लाख प्रॉपर्टी कार्डों का वितरण किया, जिनमें मध्यप्रदेश के 15 लाख 63 हजार हितग्राही शामिल हैं। प्रधानमंत्री ने योजना के लाभार्थियों के साथ संवाद भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सिवनी जिले से कार्यक्रम में शामिल हुए।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ के एक सर्वे के अनुसार क्लाइमेट चेंज, पानी की समस्या, स्वास्थ्य की समस्या और महामारी की चुनौतियों के साथ ही प्रॉपर्टी राइट्स 21वीं सदी की एक बहुत बड़ी चुनौती है। विश्व के अनेक देशों में गरीबों के पास प्रॉपर्टी राइट्स नहीं है। अर्थशास्त्री कहते हैं कि प्रॉपर्टी राइट्स नहीं होने से उनके पास 'डैड कैपिटल' है। उस पर वे कोई लेनदेन नहीं कर सकते, कोई आर्थिक गतिविधि संभव नहीं होती। घर की मिल्कियत के विवाद और दबंगों द्वारा अतिक्रमण का खतरा बना रहता है। स्वामित्व योजना के माध्यम से हमने इस चुनौती का हल निकाल लिया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा पहले की सरकारों ने इस समस्या का कोई ठोस हल नहीं निकाला। वर्ष 2014 में जब हमारी सरकार बनी तब हमने इस योजना को प्रारंभ किया। ड्रोन के माध्यम से जमीनों की मैपिंग कराई गई और गरीबों की संपत्ति के कागज तैयार किए गए। देश में लगभग 6 लाख गांव है, इनमें से आधे से अधिक गांवों का ड्रोन सर्वे पूरा हो चुका है। सवा दो करोड़ ग्रामीणों को प्रॉपर्टी कार्ड मिल गए हैं। इससे देश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी। लगभग 100 लाख करोड़ से ज्यादा की आर्थिक गतिविधियों का रास्ता खुलेगा।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि स्वामित्व योजना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के सपनों को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। गरीबों को संपत्ति के अधिकार पत्र मिल जाने से ग्राम पंचायतें आर्थिक दृष्टि से सशक्त होंगी और ग्राम स्वराज जमीन पर उतरेगा। विभिन्न आपदाओं के बेहतर प्रबंधन और ग्रामीणों को समय पर क्लेम मिलने में भी आसानी होगी।

सम्पत्ति कार्ड करेगा आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बिना किसी भेदभाव के लोगों को उनकी सम्पत्ति के स्वामित्व का अधिकार दिया है। यह स्वामित्व का अधिकार सिर्फ भू- अधिकार ही नहीं बल्कि उनके स्वाभिमान का अधिकार है। इससे वे आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त होंगे।

समाज के चारों स्तंभ सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनकल्याण अंतर्गत समाज के चार स्तंभ महिला सशक्तिकरण, युवा शक्ति, किसानों और गरीब कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता में हैं। प्रदेश सरकार महिला, युवा, गरीब और किसानों की जिंदगी बदलने के लिए लगातार काम कर रही हैं। सरकार ने युवा मिशन और गरीब कल्याण मिशन प्रारंभ किया है। इससे युवाओं के लिए रोजगार का प्रबंधन करने कीदिशा में कार्य किया जा रहा है। प्रदेश में 2.50 लाख पदों पर भर्ती की जायेगी, जिसमें सभी श्रेणियों के पद भरे जायेंगे। गरीब मिशन के अंतर्गत सभी गरीब परिवार और निम्न आय वर्ग वाले लोगों के लिए पक्के मकान होंगे।

पानी की एक-एक बूंद का उपयोग कर किसानों को बनाएं खुशहाल

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसान कल्याण अंतर्गत खेती को लाभ का धंधा बनाया जायेगा, खेतों में सिंचाई की क्षमता बढ़ाई जायेगी। हर खेत में पानी पहुंचाने का काम किया जायेगा और हर हाथ को काम दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि पारस पत्थर से सोना बनता है या नहीं यह तो पता नहीं लेकिन सूखे खेतों में पानी पहुंचने से अवश्य ही सोने रूपी फसल तैयार होंगी। हर खेत में माईक्रोलिफ्ट ऐरिगेशन के माध्यम से पानी पहुंचाया जायेगा और पानी की एक-एक बूंद का उपयोग कर किसानों को खुशहाल बनाया जाएगा।

सुप्रभात

दुःख तो आएंगे ही जीवन में -
बख्शेंगें थोड़े ही
लेकिन जब लग रहा हो कि
- नहीं सहा जाता
उसी वक्त,
ट्रेन से रेस लगाने को कहे 'मणि'
तो मैं आंसू पौछते हुए दौड़ लगा दूं नंगे पैर
'आरके नारायण' के 'स्वामी' की तरह;
चाहे जो हो जीवन की कहानी में
धोखा, बेईमानी, यहाँ तक कि
'शक ओ शुबहा' हो
हत्या के षड्यंत्र का
लेकिन कहानी का अंत
'सत्यजित राय' का हो
जिसमें मिले एक मामूली सी आदत
- झूठ बोलने की
या बचपन का कोई भय
-पेड़ देख कर डर जाने का-
और सारी गुत्थी सुलझ जाए।
लड़की जो भागी प्रेमी के साथ
उसका बस हार ही चोरी हो
उसे मिल जाये एक लड़का
-गीत गाता हुआ
जो सारी रात उसके लिए मुसीबतों से जूझे
और उसे पिताजी के उठने से पहले
उसके घर पहुंचा दे।
'चुपके चुपके' जैसा हो अंत
तो कहना ही क्या !
कि इधर रोना-धोना मचा हो
- क्लाइमेक्स हो
और उधर उसी समय
गेस्ट हाउस में मिलें सब
पीछे
सोफे में धंसे
-हा हा करके हंसते हुए।

- सोनल शर्मा

आरजेडी में अब लालू जैसी पावर तेजस्वी को मिली

- पार्टी में सिंबल से लेकर उम्मीदवार तक करेंगे तय

पटना (एजेंसी)। आरजेडी में अब राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव जैसी पावर तेजस्वी यादव को मिल गई है। वे सिंबल से लेकर चुनावी उम्मीदवार तक का नाम तय करेंगे। मतलब अब आरजेडी में सब कुछ तेजस्वी ही तय करेंगे। शनिवार को पटना के होटल मोर्या में हुई पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में ये फैसला लिया गया। बैठक में लालू यादव ने कहा कि चुनाव का बिगुल बज चुका है, तैयारी शुरू कर दें। बैठक के बाद आरजेडी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सांसद मनोज झा ने बताया कि सांगठनिक चुनाव की डेट तय हो चुकी है। पंचायत, ब्लॉक, बूथ, जिला, राज्य सभी पदों के लिए चुनाव होंगे। रामचंद्र पूर्वे को मुख्य निर्वाची पदाधिकारी बनाया गया है। प्रदेश प्रवक्ता चितरंजन गगन सहायक निर्वाची अधिकारी होंगे। वहीं प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के मीटिंग में नहीं आने के सवाल पर मनोज झा ने कहा कि पार्टी में सब नॉर्मल है।

2025 में 6.5 फीसदी रहेगी भारत की ग्रोथ रेट

- *यह दुनिया में सबसे ज्यादा, आईएमएफ का सामने आया बड़ा अनुमान*
- *पाकिस्तान के लिए 3 फीसदी, दुनिया की विकास दर 3.3 फीसदी रहेगी*

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने साल 2025 और 2026 में दुनिया भर के देशों की विकास दर को लेकर अपना पूर्वानुमान पेश किया है। आईएमएफ का अनुमान है कि 2025 और 2026 में दुनिया की ग्रोथ रेट 3.3 फीसदी रहेगी। बड़े देशों में भारत 6.5 फीसदी की ग्रोथ रेट के साथ सबसे तेजी से विकास करेगा। पाकिस्तान विकास दर 2025 में 3 फीसदी और 2026 में 4 फीसदी रहने का अनुमान है, जबकि 2024 में यह 3.2 फीसदी थी। आईएमएफ की फर्स्ट डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर गीता गोपीनाथ ने सोशल मीडिया पर वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक ग्रोथ का अनुमान पोस्ट किया। अपस्टॉक्स के मुताबिक आईएमएफ का कहना है कि भारत में इंडस्ट्रियल एक्टिविटी में उम्मीद से ज्यादा गिरावट देखी गई है। इस वजह से 2023 के मुकाबले ग्रोथ रेट भी उम्मीद से ज्यादा धीमी रही। 2023 में भारत की ग्रोथ रेट 8.2 फीसदी थी, जो 2024 में घटकर 6.5 फीसदी रह गई। इसके 2025 और 2026 में भी इतना ही रहने का अनुमान है। अनुमान के मुताबिक अमेरिका की विकास दर 2024 के मुकाबले मामूली तौर पर 0.1 फीसदी घटकर 2025 में 2.7 फीसदी रहेगी, जबकि 2026 में यह 2.1 फीसदी पर पहुंच जाएगी। आईएमएफ का कहना है कि अमेरिका के घरेलू मार्केट में मांग बनी हुई है, क्योंकि यूएस फेडरल रिजर्व (केंद्रीय बैंक) ने मौद्रिक नीति में ब्याज दरों को घटाया है। इससे लोगों को लोन मिलने में आसानी हुई है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 19 जनवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

प्रचार के दौरान केजरीवाल की गाड़ी पर पत्थर से हमला

आम आदमी पार्टी ने बीजेपी पर लगाया हमले का आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में चुनावी हलचल के बीच दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी चीफ अरविंद केजरीवाल की गाड़ी पर चुनाव प्रचार के दौरान ईंट-पत्थर से हमला किया गया है। आम आदमी पार्टी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर हमले का वीडियो शेयर करते हुए नई दिल्ली विधानसभा सीट से बीजेपी उम्मीदवार प्रवेश वर्मा पर आरोप लगाया है। आम आदमी पार्टी ने अपने ऑफिशियल एक्स हैंडल से हमले की एक वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा, हार के डर से

बौखलाई बीजेपी, अपने गुंडों से करवाया अरविंद केजरीवाल जी पर हमला! बीजेपी प्रत्याशी प्रवेश वर्मा के गुंडों ने चुनाव प्रचार करते वक्त अरविंद केजरीवाल जी पर ईंट-पत्थर से हमला कर उन्हें चोट पहुंचाने की कोशिश की ताकि वो प्रचार ना कर सकें। बीजेपी वालों, तुम्हारे इस कायराने हमले से केजरीवाल जी डरने वाले नहीं है, दिल्ली की जनता तुम्हें इसका करारा जवाब देगी। एएपी नेता प्रियंका कक्कड़ ने कहा, बीजेपी के गुंडों ने आज फिर नई दिल्ली विधानसभा में प्रचार कर रहे अरविंद केजरीवाल पर पत्थरों से हमला किया है।

आखिर हमास के आगे झुका इजरायल!

735 फिलिस्तीनियों 'आतंकियों' को आज करेगा रिहा

तेलअवीव (एजेंसी)। इजरायल और हमास के बीच गाजा में युद्धविराम के लिए फाइनल समझौता हो गया है। कतर के विदेश मंत्रालय ने ऐलान किया है कि गाजा में रविवार को सुबह 8.30 बजे से सीजफायर लागू हो जाएगा। इससे पहले इजरायल की सरकार ने इस समझौते को वोटिंग करके स्वीकृति दे दी थी। इस समझौते के पक्ष में 24 तथा विरोध में 8 वोट पड़े। कतर ने सभी पक्षों को सलाह दी है कि वे संयम बरतें और पूरी सतर्कता रखें। इससे पहले कतर के पीएम शेख मोहम्मद बिन अब्दुल रहमान अल थानी ने कहा था कि अंतिम दिनों में

हुई बातचीत निर्णायक साबित हुई। वहीं इजरायल भी 735 फिलीस्तिनियों को जेल से छोड़ने के लिए तैयार हो गया है। इजरायल का कहना है कि ये सभी आतंकी थी। इसके बदले में हमास भी इजरायल के बंधकों को रिहा करेगा। इजरायल गाजा के जिन लोगों को छोड़ने को तैयार हुआ है, उनमें जकारिया जुबेइदी भी शामिल है। यह फतह के अल अक्सा ब्रिग्रेड का पूर्व कमांडर रह चुका है। जुबेइदी उन कैदियों में शामिल है जो साल 2021 में हुए गिलबोआ जेल ब्रेक में शामिल था। इस घटना में 6 कैदी फरार हो गए थे।

कोटा में फिर दुखद खबर

जेईई की तैयारी कर रहे छात्र ने किया सुसाइड

● लगाया मौत को गले, 11 दिन में यह चौथी घटना

कोटा (एजेंसी)। कोटा शहर में सिलसिलेवार कोचिंग छात्र सुसाइड कर रहे हैं। यह घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही है। 22 जनवरी को जेईई मेंस का एग्जाम है, उसके पहले आज शनिवार को सुबह यहां जवाहर नगर थाना क्षेत्र में रहकर जेईई मेंस की तैयारी कर रहे छात्र मनन जैन ने फंदा लगाकर सुसाइड कर लिया। मृतक छात्र मनन जैन के मामा महावीर जैन ने बताया कि वह अपने नाना नानी के मकान में मौसी के लड़के के साथ रह रहा था। आज सुबह 9 बजे जब मनन जैन ने परिजनों का फोन नहीं उठाया तो पास में रहने वाले स्टूडेंट को उसके कमरे में जाकर देखने की भेजा। इसके बाद परिजनों को सूचना मिली कि मनन जैन ने सुसाइड कर लिया। वे लोग मौके पर आए तो वह फंदे पर लटका शव मिला। पुलिस भी मौके पर बुलाई गई। एमबीएस अस्पताल मोर्चरी पर बॉडी लाई गई, जहां परिजनों की रजामंदी पर मनन जैन का नेत्रदान करवाया गया। लेकिन परिजनों ने पोस्टमार्टम करवाने से मना कर दिया। मामा महावीर जैन ने बताया कि मनन जैन मनीष जैन का इकलौता बेटा था। पढ़ाई में सुपर इंटेलईजेंट था। पिछले तीन सालों से वह कोटा में अपने नाना- नानी के मकान में रहकर पढ़ाई कर रहा था। आईआईटी करना उसका सपना था। 22 जनवरी को उसका जेईई मेंस का एग्जाम था। बीते कल शुक्रवार को उसकी आखिरी बार परिजनों से बातचीत हुई। कभी ऐसा नहीं लगा कि वह इस तरह का कदम उठाएगा। वह धार्मिक प्रवृत्ति का लड़का था। पिता मनीष जैन बूंदी जिले के इंदरगढ़ के रहने वाले हैं। मोबाइल और किराने का व्यापार है। मनन जैन इकलौता बेटा था। इस सदमे को माता-पिता झेल नहीं पा रहे हैं।

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने शनिवार को दिल्ली में सौजन्य भेंट की।

खराब रोड बनाना अब गैर-जमानती अपराध होना चाहिए

गडकरी बोले-एक्सीडेंट के लिए रोड कॉन्ट्रैक्टर और इंजीनियर को जिम्मेदार ठहराकर जेल भेजना चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने गुरुवार को कहा कि गलत सड़क बनाना नॉन-बेलेबल ऑफेंस यानी गैर-जमानती अपराध बना देना चाहिए। रोड एक्सीडेंट के लिए रोड कॉन्ट्रैक्टरों और इंजीनियरों को जिम्मेदार ठहराना चाहिए और जेल भेजना चाहिए। इंडस्ट्री बॉडी की तरफ से आयोजित एक इवेंट में गडकरी ने कहा कि सड़क हादसों में भारत दुनिया में नंबर 1 है। हमारा लक्ष्य है कि 2030 तक सड़क हादसों में मरने वाले लोगों की संख्या को आधा किया जा सके। गडकरी ने बताया कि मिनिस्ट्री के डेटा के मुताबिक 2023 में पांच लाख सड़क हादसे हुए जिनमें 1.72 लाख मौतें हुईं। इनमें से 66.4 फीसदी यानी 1.14 लाख लोग 18 से 45 साल की उम्र के थे, जबकि 10 हजार लोग बच्चे थे। 55 हजार मौतें हेलमेट न पहनने के कारण और 30 हजार मौतें सीट बेल्ट न लगाने के कारण हुईं।

उप मुख्यमंत्री ने दिव्यांगजनों को बैटरीयुक्त ट्राईसाइकिल प्रदान की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने दिव्यांगजन तेजभान पटेल निवासी लौआ लक्ष्मणपुर, दीपक सिंह गहरवार निवासी बोदाबाग तथा शशिकांत पाण्डेय निवासी बुड़वा को बैटरीयुक्त ट्राईसाइकिल प्रदान की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों की सेवा ईश्वरीय सेवा है। बैटरीयुक्त ट्राईसाइकिल मिल जाने से इनकी दिनचर्या सरल, सुलभ व आराम दायक हो जायेगी। उन्होंने भारतीय रेडक्रास टीम रीवा की सेवा भावना की सराहना की। इस अवसर पर चेयरमैन रेडक्रास सोसायटी डॉ. प्रभाकर चतुर्वेदी, पीयूष पटेल, राजीव तिवारी, पवन शुक्ला, डा. ऋषभ तिवारी,प्रो.अजय शंकर पांडेय,राजा भैया, संजय शुक्ला सहित गणमान्य जन उपस्थित रहे।

स्वामित्व व भू-अधिकार गांव के विकास का बन रहे हैं आधार - उप मुख्यमंत्री शुक्ल

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने स्वामित्व योजना के तहत सम्पत्ति कार्ड का किया वितरण

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि देश व प्रदेश में विकास कार्यक्रमों के साथ ही हितग्राहीमूलक योजनाएँ प्राथमिकता से क्रियान्वित की जा रही हैं और पात्र लोगों को इनका लाभ दिलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश में जनकल्याणकारी योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। प्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में केन्द्र संचालित योजनाओं के साथ ही प्रदेश स्तर पर जनकल्याण के कार्य कराकर लोगों को इनसे लाभान्वित किया जा रहा है। स्वामित्व योजना से पट्टे मिलने से अब हितग्राही उस जमीन से मालिक बन गये और लोगों को पक्का कानूनी अभिलेख भी मिल गया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि स्वामित्व व भू-अधिकार गांव के विकास का आधार बन रहे हैं। उन्होंने जिला प्रशासन द्वारा तत्परतापूर्वक किये गये पट्टा बनाने व वितरण कार्य की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आगामी 31 जनवरी तक शेष रह गये हितग्राहियों को भी पट्टे मिल जायेंगे। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश के 50 हजार से अधिक ग्रामों के 65 लाख हितग्राहियों को स्वामित्व योजना के तहत सम्पत्ति कार्ड का वितरण किया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल स्वामित्व योजना के जिला स्तरीय कार्यक्रम नगर निगम टाउन हाल रीवा में शामिल हुए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने शहरी क्षेत्र में सूची बनाकर समस्त पात्र हितग्राहियों को धारणाधिकार के पट्टे दिलाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों से अपेक्षा की कि हितग्राहीमूलक योजनाओं के क्रियान्वयन में सहभागी बनकर प्रजातंत्र को वरदान बनायें। उप मुख्यमंत्री ने हितग्राहियों को स्वामित्व कार्ड का वितरण किया।कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने बताया कि जिले के 156 ग्रामों के 4283 हितग्राहियों का 7 लाख 95 हज़ार 234 वर्ग मीटर भूमि का पट्टा प्रदान किया जा रहा है। इससे पूर्व वर्ष 2023 से मार्च 2024 तक जिले के 44 ग्रामों के कुल 2211 पट्टे बांटे जा चुके हैं। शेष पट्टे आगामी 31 जनवरी तक वितरित कर दिये जायेंगे। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीता कोल, अध्यक्ष नगर निगम श्री व्यंकटेश पाण्डेय, डीआईजी श्री साकेत सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि विभागीय अधिकारी व हितग्राही उपस्थित रहे।

प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं और उच्च स्तर की शिक्षा विकास का मूल लक्ष्य : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं तथा उच्च स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराना ही विकास का मूल लक्ष्य है। आयुष्मान भारत योजना देश के नागरिकों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। आज देश के 55 करोड़ से अधिक नागरिकों को इस योजना के माध्यम से शासकीय एवं निजी चिकित्सालयों में 5 लाख रूपये तक की निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त हो रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस योजना का विस्तार करते हुए देश के 70 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक नागरिक को सम्मिलित किया है। अब देश के 6.5 करोड़ 70 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों के इलाज की पूरी जिम्मेदारी सरकार की होगी। आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से प्रधानमंत्री जी ने देश के गरीब से गरीब व्यक्ति की पहुंच उत्कृष्ट निजी चिकित्सालयों तक सहज कर दी है। इससे निजी क्षेत्र के चिकित्सालयों को भी लाभ प्राप्त हो रहा है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सीधी हास्पिटल में 96 स्लाइस सीमेन्स सीटी स्कैन एवं नेचुरापैथी का शुभारंभ किया। उन्होने स्वास्थ्य के क्षेत्र में सीधी हास्पिटल द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी तथा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयासों से प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं में लगातार विस्तार हो रहा है। आने वाले समय में प्रदेश में स्वास्थ्य विभाग में 35 हजार नए पदों की भर्ती होगी जिसमें 3 हजार चिकित्सक एवं 3 हजार पैरामेडिकल स्टाफ सम्मिलित हैं। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला चिकित्सालयों के साथ-साथ विकासखण्ड स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार होगा। विकासखण्ड स्तर पर सर्वसुविधा युक्त डॉक्टर कालोनी बनाई जावेगी जिसका लाभ सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में पदस्थ चिकित्सकों को मिलेगा। विकासखंड स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार से जिला चिकित्सालय में दबाव कम होगा और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज ने कर्नाटक राजस्व मंत्री के साथ की समीक्षा बैठक कर कहा

भारत सरकार कर्नाटक की बेहतरी के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगी

बैंगलुरू/नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान दो दिवसीय कर्नाटक दौरे पर हैं। इस दौरान श्री शिवराज सिंह ने शनिवार को बैंगलुरू में राज्य के कृषि, ग्रामीण विकास और राजस्व मंत्री के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में श्री शिवराज सिंह ने राज्य में कृषि योजनाओं, ग्रामीण विकास के कार्यों, राजस्व से जुड़ी गतिविधियों और भारत सरकार की योजनाओं पर मंत्रियों व अधिकारियों से विस्तार से चर्चा की। बैठक में शिवराज सिंह ने कहा कि एक होती है आरोप प्रत्यारोप की राजनीति लेकिन हम लोग विकास की राजनीति करते है, जनकल्याण की राजनीति करते हैं। हमारे देश में संघीय लोकतंत्र है, हमारा मकसद है, राज्य सरकार को हम भारत सरकार की योजनाओ के तहत भरपूर सहयोग करें, ताकि किसी भी कीमत पर कर्नाटक का विकास बाधित ना हो।

हमारा लक्ष्य विकसित कर्नाटक- केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि केंद्र सरकार ने पहले जो फंड रिलीज किये थे, कर्नाटक सरकार उसे पूरी तरह से जल्द ही यूटिलाइज करें। वहीं शिवराज सिंह ने कहा कि कर्नाटक के राजस्व मंत्री ने वाटरशेड स्कीम के तहत अतिरिक्त फंड का आग्रह किया है, इसलिए हम वाटरशेड स्कीम के लिए कर्नाटक को 97 करोड़ रूपए का अतिरिक्त फंड रिलीज कर रहे हैं।राज्य के कृषि मंत्री ने मैकेनाइजेशन की स्कीम के तहत अतिरिक्त फंड की मांग की है, उसे भी हमने स्वीकार किया है। साथ ही केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की आत्मा योजना के लिए अतिरिक्त स्टॉफ की भी मांग की गई है, जिसे भी हम पूरा करेंगे। इसके अलावा समीक्षा बैठक में तीनों मंत्रियों ने योजनाओं और विकास कार्यों को लेकर कुछ ज्ञापन सौंपे हैं, इस पर भी हम विचार-विमर्श करेंगे।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमें वर्ष 2047 तक विकसित भारत का निर्माण करना है और विकसित भारत के लिए विकसित कर्नाटक भी हमारा लक्ष्य है। श्री शिवराज सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हम कर्नाटक के विकास में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे। राज्य सरकार से मेरा आग्रह है कि वो समय पर फंड ठीक ढंग से खर्च करें, यूटिलाइजेशन सर्टिफिकेट भेजे तो भारत सरकार कर्नाटक की बेहतरी के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

हर गरीब को पक्का मकान मोदी जी का संकल्प- केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि हर गरीब को पक्का मकान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का संकल्प है। तीसरी बार प्रधानमंत्री पद संभालने के बाद केंद्र सरकार ने गत सितंबर माह में कर्नाटक राज्य को 2 लाख 26 हजार 175 मकान बनाने की स्वीकृति दी थी, जिसके लिए राशि भी अलॉट कर दी गई थी। कर्नाटक में गरीबों के पक्के मकान के लिए हमने फिर से उस लक्ष्य को बढ़ाया है और कर्नाटक को अब तक गरीबों के लिए 4,76,556 मकान और आवंटित किए हैं। कुल मिलाकर, इस वित्तीय वर्ष में 7,02,731 आवासों का लक्ष्य कर्नाटक के लिए रखा गया है। प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में गरीबों की सेवा ही हमारे लिए भगवान की पूजा है। हर गरीब का पक्का मकान बने, यही हमारा संकल्प है।

कोलकाता डॉक्टर रेप-मर्डर केस

162 दिन बाद आया फैसला, संजय रॉय दोषी करार

सोमवार को होगा सजा का ऐलान, सुप्रीम तारीख तय

कोलकाता (एजेंसी)। आर जी कर रेप मर्डर के मामले में सियालदह कोर्ट ने मुख्य आरोपी संजय रॉय को दोषी करार दिया है। सीबीआई की ओर से पेश किए गए सबूत, फरेंसिक रिपोर्ट और 50 गवाहों के बयान के आधार पर यह फैसला दिया है। इस मामले में 9 जनवरी को आखिरी बहस हुई थी, जिसमें सीबीआई ने आरोपी संजय रॉय को सजा ए मौत देने की मांग की थी। कोर्ट इस दोषी संजय रॉय को 20 जनवरी को सजा सुनाएगी। शनिवार को करीब एक बजे सियालदह कोर्ट में मुख्य आरोपी संजय रॉय को लाया गया। इसके बाद दोनों पक्षों के वकीलों ने सजा पर बहस की। इसके बाद जस्टिस अनिर्बन राय ने कोर्ट रूम नंबर 210 में सजा सुनाई। बता दें इस केस की सुनवाई पर पीड़िता के पिता असंतोष जाहिर कर चुके हैं । उन्होंने सीबीआई जांच पर भी सवाल उठाए। पीड़िता के पिता ने कहा कि हमारे वकील और सीबीआई ने हमें बार-बार कहा है कि कोर्ट में नहीं जा सकते। कोर्ट में क्या चल रहा है, हम नहीं जानते। सीबीआई ने मुझे कभी नहीं बुलाया। जांच टीम एक या दो बार हमारे घर आई। जब भी हमने उनसे जांच के बारे में पूछा, उन्होंने कहा कि जांच चल रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि वारदात की रात ड्यूटी पर जो लोग थे, उनसे पूछताछ नहीं की गई। मेरी बेटी की गर्दन पर काटने के निशान थे लेकिन वहां से स्वाब नहीं लिया गया।

विस्फोट या आग के खतरे से सुरक्षित ओलेक्ट्रा की ई बस

भोपाल। इलेक्ट्रिक बस निर्माता कंपनी ओलेक्ट्रा ग्रीनटेक लिमिटेड (ओजीएल) ने शनिवार को अपनी नई इलेक्ट्रिक बस नई दिल्ली में ग्लोबल एक्सपो 2025 में पेश की। यह बस ब्लेड बैटरी चेसिस टेक्नोलॉजी के साथ डिजाइन की गई है। ब्लेड बैटरी तकनीक का नल पेनिट्रेशन और फर्नेस जैसा कठोर परीक्षण किया गया। इस दौरान इसमें किसी भी प्रकार की आग या विस्फोट नहीं हुआ। यानी, यह तकनीक आग और विस्फोट से पूरी तरह से सुरक्षित है। ब्लड बैटरी तकनीक में 30 प्रतिशत अधिक ऊर्जा भंडारण क्षमता है। एक बार चार्जिंग में यह 500 किलोमीटर तक का सफर कर सकती है इसका कैपेक्ट और हल्का डिजाइन कम जगह लेता है। ब्लड बैटरी तकनीक से बस को 5000 से अधिक बार चार्ज किया जा सकता है।

इसमें एयर सस्पेंशन और नीलिंग मैकेनिज्म के कारण दिव्यांग भी आरामदायक यात्रा कर सकते हैं। उनके चढ़ने उतरने के लिए बस में व्हीलचेयर रैंप का भी डिजाइन किया गया है। ओलेक्ट्रा की बसें भारत के 10 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में लाखों यात्रियों को पर्यावरण अनुकूल यात्रा का अनुभव दे रही हैं।

बस में पूर्णतः डिजिटल उपकरण पैनल, इलेक्ट्रॉनिक हाइड्रोलिक पावर स्टीयरिंग, रियल-टाइम वाहन ट्रैकिंग सिस्टम और रिवर्स पार्क असिस्ट सिस्टम जैसी सुविधाएं हैं। यूएसबी चार्जिंग पोर्ट, छत पर लगे एयर कंडीशनिंग और कैंटिलीवर सीटें जैसी सुविधाएं यात्रियों को आरामदायक यात्रा का अनुभव प्रदान करती हैं। ओलेक्ट्रा की बसें भारत के विभिन्न शहरों में सार्वजनिक परिवहन को स्वच्छ और सुरक्षित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

11वीं के छात्र की ट्रेन से कटकर मौत

परिजन बोले- ऑनलाइन फ्री फायर गेम खेलता था; टास्क पूरा करने में गई जान

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 11वीं के छात्र की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। वह ऑनलाइन गेम-फ्री फायर खेलने का आदी था। परिजन का मानना है कि ऑनलाइन गेमिंग में किसी टास्क को पूरा करने में वह ट्रेन की चपेट में आ गया। इससे उसकी जान चली गई।घटना शुक्रवार रात छोला मंदिर थाना क्षेत्र की है। शनिवार को पुलिस ने परिजन के बयान दर्ज किए। इस दौरान उसकी ऑनलाइन गेम खेलने के आदी होने का खुलासा हुआ। टीआई सुरेश चंद्र नागर ने बताया कि मोबाइल फोन जब्त कर लिया है। फोन की फोरेंसिक जांच कराई जाएगी।

मामा बोले- भांजा मोबाइल में बिजी रहता था- छात्र मृत्युंजय शर्मा पुत्र रमा शर्मा (16) भानपुर मल्टी में रहता था। वह प्राइवेट स्कूल से 11वीं कक्षा की पढ़ाई कर रहा था। मृतक के मामा मनोज शर्मा ने बताया कि भांजा ऑनलाइन गेम खेलने का शौकीन था। अधिकांश समय मोबाइल में व्यस्त रहता और फ्री फायर गेम खेलता था।

महाराष्ट्र में शरद पवार को फिर लगा झटका

विधायक सतीश चव्हाण ने शिरडी में पहनी अजित पवार की 'घड़ी'

पुणे/शिरडी (एजेंसी)। महाराष्ट्र में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) के प्रमुख शरद पवार को बड़ा झटका लगा है। एनसीपी (एसपी) के नेता और विधायक सतीश चव्हाण ने शनिवार को शिरडी में अजित पवार की अगुवाई वाली एनसीपी की सदस्यता ग्रहण कर ली। अजित पवार की अगुवाई वाली एनसीपी ने शिरडी में दो दिवसीय नव संकल्प शिविर आयोजित किया है। शिविर के पहले दिन सतीश चव्हाण ने बड़े पवार को छोड़कर उनके भतीजे की पार्टी का दामन थाम लिया। सतीश चव्हाण ने ऐसे वक्त पर शरद पवार का साथ छोड़ा है जब राज्य में पवार की अगुवाई वाली एनसीपी के सांसदों के भी पाला बदलने की अटकलें जारी हैं। विधायक सतीश चव्हाण ने विधानसभा चुनावों से पहले अजित पवार के खेमे से इस्तीफा दिया था। वह तब शरद पवार के पास आ गए थे विधानसभा चुनावों में शरद पवार की अगुवाई वाली एनसीपी (एसपी) के करारी शिकस्त के बाद अब सतीश पवार फिर से अजित पवार के पास चले गए हैं।

एम्स भोपाल में दुर्लभ एड्रेनल ब्लैडर ट्यूमर का सफल उपचार

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में एम्स भोपाल ने दुर्लभ और जटिल यूरोलॉजिकल ट्यूमर के इलाज में एक महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। यूरोलॉजी विभाग ने पिछले एक साल में उन्नत लैप्रोस्कोपिक तकनीक (दूरबीन के ऑपरेशन) द्वारा 13 हार्मोन स्रावित एड्रेनल ट्यूमर का सफल इलाज किया, जो संस्थान की चिकित्सा देखभाल में नवीनता और सर्जिकल विशेषज्ञता को दर्शाता है। इनमें से 7 मरीजों में क्रियाशील हार्मोन स्रावित एड्रेनल ट्यूमर, जैसे फियोक्रोमोसाइटोमा और एल्डोस्टेरोनोमा का इलाज मिनिमल इनवेसिव लैप्रोस्कोपिक एड्रेनलेक्टॉमी के जरिए किया गया। यह एक सर्जिकल प्रक्रिया है, जिसमें एड्रेनल ग्रंथि (जो किडनी के ऊपर स्थित होती है) को हटाने के लिए लैप्रोस्कोपिक तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। इस प्रक्रिया में छोटे चीरे लगाए जाते हैं, और एक लैप्रोस्कोप (एक लंबी पतली ट्यूब जिसमें कैमरा और रोशनी लगी होती है) का उपयोग करके सर्जन एड्रेनल ग्रंथि तक पहुँचते हैं। इस प्रक्रिया में कम दर्द होता है और रिकवरी की संभावना जल्दी होती है। जून 2023 से मई 2024 के बीच की गई लैप्रोस्कोपिक सर्जरी में रेट्रोपेरिटोनियल और ट्रांसपेरिटोनियल दोनों तरीकों का इस्तेमाल किया गया, जो ट्यूमर के आकार, स्थान और हार्मोनल गतिविधि के हिसाब से तय किए गए थे। इन प्रक्रियाओं के नतीजे उल्लेखनीय रहे, जिसमें 43 प्रतिशत मरीजों में एल्डोस्टेरोन स्रावित एडिनोमा और 57प्रतिशत में फियोक्रोमोसाइटोमा पाए गए। फियोक्रोमोसाइटोमा से प्रभावित सभी मरीजों में ऑपरेशन के बाद रक्तचाप सामान्य हो गए। रेट्रोपेरिटोनियल मामलों के लिए औसत ऑपरेशन का समय 120 मिनट और ट्रांसपेरिटोनियल मामलों के लिए 90 मिनट था।

इसके अलावा, एम्स भोपाल ने तीन दुर्लभ न्यूरोएंडोक्राइन ब्लैडर ट्यूमर का सफल इलाज किया, जो दुनिया भर में ब्लैडर कैंसर के सभी मामलों का 1त से भी कम होते हैं। इन मामलों की पहचान न्यूरोएंडोक्राइन ट्यूमर और पैराग्लैंग्लियोमा के रूप में की गई और इनका प्रबंधन उन्नत निदान तकनीकों, जैसे इमेजिंग, मेटाबोलिक जांच और हिस्टोपैथोलॉजी के माध्यम से किया गया। यह कार्य दोहा में आयोजित प्रतिष्ठित अरब एसोसिएशन ऑफ यूरोलॉजी सम्मेलन में डॉ. केतन मेहरा द्वारा प्रस्तुत किया गया और बाद में यूसीकॉन 2025, चेन्नई में भी प्रस्तुत किया गया, जहां इसे वैश्विक चिकित्सा समुदाय में व्यापक सराहना मिली। इसके साथ ही इस क्षेत्र में आगे भी अनुसंधान किए जा रहे हैं।

प्रो. सिंह ने कहा, यह उपलब्धि यूरोलॉजी में हमारी निरंतर प्रगति को दर्शाती है। इन उन्नत लैप्रोस्कोपिक तकनीकों की सफलता हमारे मरीजों को विश्वस्तरीय देखभाल प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह उपलब्धि यूरोलॉजिकल ट्यूमर के प्रबंधन में उन्नत लैप्रोस्कोपिक सर्जरी में विभाग की विशेषज्ञता का प्रमाण है, जो एम्स भोपाल को यूरोलॉजी में एक उत्कृष्टता केंद्र के रूप में स्थापित करता है। यह कार्य यूरोलॉजी से डॉ. देवाशीष कौशल, डॉ. कुमार माधवन, डॉ. केतन मेहरा और डॉ. निकिता श्रीवास्तव तथा एंडोक्राइनोलॉजी से डॉ. अल्पेश गोयल और डॉ. राहुल गुप्ता के मार्गदर्शन में किया गया।

परिक्रमा

अमित शाह ने म.प्र. में ई-समन प्रणाली की सराहना की

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को इस बात से काफी सुकून मिला होगा कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मध्यप्रदेश सरकार द्वारा ई-समन व्यवस्था लागू किये जाने की सराहना की और इसके साथ ही अन्य राज्यों को भी इस पर अमल करने की सलाह दी। इस प्रकार मोहन यादव सरकार केन्द्र की नजर में सराहनीय कार्य कर रही है और जहां जरुरी है वह आवश्यक कदम उठा रही है। तीन आपराधिक कानूनों में मध्यप्रदेश सरकार के कामकाज की समीक्षा के दौरान अमित शाह की बॉडी लैंग्वेज से यही प्रदर्शित हो रहा था कि मोहन यादव पर उनका वरदहस्त है और वह उनके द्वारा उठाये जाने वाले कदमों को उचित मानते हैं। मध्यप्रदेश की ई-समन व्यवस्था को अन्य राज्यों को भी अपनाने का परामर्श उन्होंने दिया। ऐसा माना जाता है कि अमित शाह ने मध्यप्रदेश में लागू नये आपराधिक कानूनों की एक प्रकार से समीक्षा की और उसमें उन्होंने पाया कि यह अपने आप में एक मॉडल व्यवस्था है। मध्यप्रदेश ई-समन प्रणाली लागू करने वाला देश का पहला राज्य बन गया है और न केवल पहला राज्य बना बल्कि उसने जो कदम उठाये उसे केंद्रीय गृहमंत्री का समर्थन भी मिला है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की ओर से दिल्ली में केंद्रीय गृहमंत्री से हुई अपनी मुलाकात के दौरान उन्होंने कानूनों के परिपालन पर एक रिपोर्ट भी पेश की जिसमें बताया कि नये आपराधिक कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए बड़े स्तर पर प्रशिक्षण दिलवा रहे हैं। इसका एक अर्थ यह भी निकलता है कि मोहन यादव केवल कानून में संशोधन कर चुप बैठने वाले नहीं बल्कि उसका परिपालन भी सही ढंग से हो इसकी माकूल व्यवस्था भी कर रहे हैं। कानून में शामिल सभी बिन्दुओं पर तेजी से अमल किया जा रहा है। यादव ने बताया कि ई-समन व्यवस्था को लागू करने वाला मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है। मोहन यादव ने जो प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया उसमें यह रेखांकित किया गया है कि आधुनिकतम संसाधनों के प्रयोग से इलेक्ट्रानिक साक्ष्य के आधार पर प्रकरणों का तेजी से निराकरण किया जा रहा है। इस व्यवस्था से न्याय प्रक्रिया आसान हुई है तथा पुलिस का समय भी बच रहा है। अमित शाह ने मुख्यमंत्री मोहन यादव को महीने में एक बार मुख्य सचिव को 15 दिन में और पुलिस महानिदेशक को सप्ताह में एक बार संबंधित विभागों के अफसरों के साथ नये कानून की समीक्षा करने का निर्देश दिया। उनकी अपेक्षा थी कि राज्य के पुलिस महानिदेशक सभी पुलिस कर्मियों को समय पर न्याय दिलाने के लिए संवेदनशील बनायें। इसका मतलब साफ है कि शाह ने यह स्पष्ट रुप से जता दिया है कि पुलिसकर्मी अपना पुराना ढर्रा बदलें और उनका रवैया ऐसा होना चाहिये जिससे लोगों को लगे कि उन्हें समय पर न्याय मिल रहा है।

केंद्रीय गृहमंत्री शाह ने कड़े व स्पष्ट निर्देश देते हुए इस बात पर जोर दिया है कि नये कानूनों को शत-प्रतिशत लागू किया जाए तथा आतंकवाद और संगठित अपराधों से जुड़ी धाराओं में केस दर्ज करने से पहले वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा मामले का मूल्यांकन किया जाए। जीरो पर की गईं कितनी एफआईआर नियमित में बदलीं इसकी भी निरन्तर निगरानी की जाए और सीसीटीएनएस के जरिये दो राज्यों के बीच एफआईआर ट्रांसफर करने की व्यवस्था का पालन हो। शाह ने यह भी निर्देश दिया कि एक से अधिक फोरेंसिक साइंस मोबाइल वेन उपलब्ध कराई जायें तथा अस्पतालों और जेलों पर्याप्त संख्या में क्यूबिकल विकल्प बनाये जायें ताकि वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये साक्ष्य दर्ज कराने में मदद मिल सके। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुडे मामलों में आरोपित ऐसे भगोड़ों के खिलाफ अनुपस्थिति में परीक्षण की शुरुआत करें जो लम्बे समय से फरार हैं। पूछताछ के लिए हिरासत में रखे गये लोगों की जानकारी इलेक्ट्रानिक डेशबोर्ड पर उपलब्ध होना चाहिये। सूची और अदालत में भेजे जाने वाले मामलों की जानकारी भी डेशबोर्ड बताये। फोरेंसिक विज्ञान के जानकार अधिकारियों की भर्ती के लिए मध्यप्रदेश नेशनल फोरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी से समझौता किया जाए।

आमने-सामने भिड़ते भूपेंद्र और हेमंत

पूर्व मंत्री और सागर जिले की खुरई विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक भूपेन्द्र सिंह और मध्यप्रदेश विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे इन दिनों आमने-सामने आकर एक-दूसरे से भिड़न्त करने की मुद्रा अख्तियार किए हुए हैं। भूपेन्द्र सिंह ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और पुलिस महानिदेशक को पत्र लिखकर अटेर विधानसभा क्षेत्र के विधायक और विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे के विरुद्ध प्रकरणों तथा उनके भाई योगेश के आपराधिक मामलों की जांच कराने की मांग की है। उन्होंने यह भी मांग की है कि हेमंत कटारे के प्रकरण में एफएसएल रिपोर्ट को पॉजिटिव से निगेटिव में बदलने की निष्पक्ष जांच कराई जाये। भूपेंद्र सिंह ने यह भी कहा कि योगेश कटारे पर 35 आपराधिक प्रकरण चल रहे हैं। वहीं दूसरी ओर हेमन्त कटारे ने भूपेंद्र सिंह के आरोपों के जवाब में कहा है कि जिस युवती का उपयोग कर मुझे झूठे केस में फंसाने का काम किया गया था उस एफआईआर को हाईकोर्ट निरस्त कर चुका है। युवती ने शपथपत्र देकर साजिश को उजागर किया था। कटारे ने आरोप लगाया कि जब केस दर्ज हुआ था तब भूपेंद्र सिंह ही गृहमंत्री थे और उनके इशारे पर ही एफआईआर हुई थी। हेमंत कटारे ने भूपेंद्र सिंह को सलाह दी है कि महिलाओं की आड़ लेकर राजनीति न करें और सामने आकर लड़ें, शायद भूपेंद्र सिंह को नियम, कानून का ज्ञान नहीं है, ज्ञान होता तो इस तरह का पत्र नहीं लिखते। भाई पर लगे आरोपों के संबंध में उन्होंने कहा कि यदि 35 अपराधों की सूची देते हैं तो राजनीति से सन्यास ले लूंगा। कटारे ने भूपेंद्र सिंह पर जो आरोप लगाये हैं उससे संबंधित तथ्यों के दस्तावेज भी दिये हैं, और इसी आधार पर उन्होंने सिंह को सन्यास लेने की सलाह दी है साथ ही कटारे ने उन लगाये लगाये गये आरोपों की तथ्यात्मक जानकारी देने की मांग की है। उन्होंने यह भी सलाह दी कि आपकी सरकार है कार्रवाई कीजिए और सस्ती लोकप्रियता के लिए झूठे आरोप न लगायें। परिवहन घोटाले के बारे में कटारे ने सिंह से कहा है कि अब आपको राजनीति से सन्यास ले लेना चाहिये क्योंकि मैंने आपकी नोटशीट भी आपको दिखा दी है। सन्यास सम्मानपूर्वक होना चाहिये, मैं भी शामिल होने आऊंगा।

और यह भी

मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व वरिष्ठ कांग्रेस नेता सांसद दिग्विजय सिंह ने भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन के लोगों को समझाया है कि केवल नारे लगाकर भाजपा और आरएसएस से नहीं लड़ सकते हो इसके लिए संघर्ष करना होगा। राजनीतिक जीवन कठोर होता है और लाखों में सौ-दो सौ ही सफल हो पाते हैं। हम उस देश के लोग हैं जिसमें सनातन सबसे पुराना धर्म है और जो सभी धर्मों का सम्मान करने वाला है। कार्यकर्ताओं को उन्होंने सफल होने का मंत्र देते हुए कहा कि संपर्क, संवाद, संयम, सामंजस्य और सकारात्मकता को अपनायें। इस प्रकार उनके पांच सूत्रीय मंत्र पर कार्यकर्ता कितना अमल करते हैं यह आने वाले समय में ही पता चल सकेगा। उन्होंने कहा कि रिटायर्ड प्रोफेसर, प्रचार्य और शिक्षाविदों को अपने कार्यक्रमों में शामिल करें। स्कूलों से कालेजों में प्रवेश लेने वाले छात्रों की हेल्पडेस्क लगाकर मदद करना संगठन का उद्देश्य होना चाहिये।

दिग्विजय ने नरोत्तम पर लगाए गंभीर आरोप

फेसबुक पर लिखा-मिश्रा करा सकते है हिमांशु भार्गव की हत्या, सुरक्षा देने की मांग

भोपाल (नप्र)। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने प्रदेश के पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा के साथ एक युवक की तस्वीर सोशल मीडिया पर साझा करते हुए एसपी दतिया से शिकायत की है। दिग्विजय ने फेसबुक पर लिखा कि नरोत्तम मिश्रा इस युवक से मिलकर दतिया के हिमांशु भार्गव की हत्या करा सकते हैं।उन्होंने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से अपील की कि हिमांशु और उसके परिवार को तुरंत सुरक्षा प्रदान की जाए। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय

सिंह ने नरोत्तम मिश्रा के साथ एक युवक की तस्वीर सोशल मीडिया पर साझा करते हुए एसपी दतिया से शिकायत की है। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने फेसबुक पर एक पोस्ट के जरिए प्रदेश के पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि नरोत्तम मिश्रा के साथ सुरेंद्र दुबे नामक एक युवक रहता है, जिसे दतिया जिला सत्र न्यायालय से 5 साल की सजा सुनाई गई है। यह युवक आदतन अपराधी है और 20 साल पहले रघुबर दयाल को गोली मार चुका है।दिग्विजय ने दतिया एसपी को टैग करते हुए लिखा कि हिमांशु भार्गव को यह शक है कि नरोत्तम मिश्रा और सुरेंद्र दुबे मिलकर उसकी हत्या करा सकते हैं, जिसकी शिकायत हिमांशु ने सीएम हेल्पलाइन पर की थी।

भोपाल में चौथी के छात्र की फंदा लगने से मौत

मां काम पर गई थी, बहन को खिलाते समय झूले में फंसी थी गर्दन

भोपाल (नप्र)। भोपाल के एमपी नगर स्थित अर्जुन नगर में 13 वर्षीय बालक अर्जुन इबदे की शुक्रवार रात को मौत हो गई। अर्जुन अपनी छोटी बहन को झूला झुला रहा था, इसी दौरान झूले का फंदा उसकी गर्दन में फंस गया, जिससे गला कसने से उसकी मौत हो गई।घटना के समय उसकी मां बंगलों में काम पर गई हुई थी, और पिता की दो साल पहले एक्सीडेंट में मौत हो चुकी थी। अर्जुन चौथी कक्षा का छात्र था और मां की गैर-मौजूदगी में अपने छोटे भाई मयंक (11) और बहन अंशिका (4) की देखभाल कर रहा था। शुक्रवार रात करीब 8 बजे जब अंशिका रोने लगी, तो अर्जुन ने उसे झूले में लिटा दिया और झूलाने लगा।झूला तेजी से झूलते हुए एक बार वापस बल खुलने पर फिर झूलने लगा, और इसी दौरान अर्जुन की गर्दन झूले के बल में फंस गई।मामा शंकर ने बताया कि खेलते समय झूले के बल में अर्जुन की गर्दन फंसने से उसकी मौत हो गई। एक पड़ोसी बच्चे ने अर्जुन को बेसुध अवस्था में देखा और तुरंत जानकारी दी। मयंक उस समय बाहर खेल रहा था। अर्जुन को फंदे से निकाला गया और उसकी मां को सूचित किया गया।पुलिस मौके पर पहुंची, पंचनामा कार्रवाई की और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। मामले की जांच कर रहे प्रधान आरक्षक इंदर सिंह ने बताया कि मर्ग कायम कर लिया गया है और पीएम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। परिजनों ने किसी भी प्रकार की शंका जाहिर नहीं की है, और झूले में गला कसने से मौत होने का अनुमान लगाया जा रहा है।

मजबूत हुई मप्र के स्कूलों की बुनियाद, स्कूलों की संख्या में देश में दूसरा स्थान

● मप्र को स्कूल शिक्षा का उत्कृष्ट केन्द्र बनाने मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दिए निर्देश

● सीएम राइज स्कूल लिख रहे नया अध्याय ● यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉरमेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस रिपोर्ट जारी

भोपाल (नप्र)। सरकारी स्कूलों में आदर्श अधोसंरचना स्थापित करने में मध्यप्रदेश ने निजी क्षेत्र की बराबरी कर ली है और कई मामलों में पीछे छोड़ दिया है। केन्द्र सरकार द्वारा हाल में जारी यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इनफॉरमेशन सिस्टम (यूडीआई) फॉर एजुकेशन प्लस रिपोर्ट में देश के सरकारी स्कूलों की अधोसंरचना पर जारी रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया है। रिपोर्ट में सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, निजी और अन्य स्कूलों में 2014 की स्थिति और वर्तमान स्थिति का तुलनात्मक आकलन किया गया है।

रिपोर्ट में स्कूलों में पेयजल की व्यवस्था, बेटियों के लिए शौचालय व्यवस्था, बच्चों के लिए अलग शौचालय, हाथ धोने की सुविधा, विद्युत कनेक्शन, लाइब्रेरी सुविधा, खेल मैदान, चिकित्सीय परीक्षण की सुविधा, कंप्यूटर की उपलब्धता, इंटरनेट सुविधा, दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए हैंडरेल समेत रैंप, टॉयलेट की सुविधा, किचन गार्डन रैन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम और सोलर ऊर्जा सिस्टम जैसी अधोसंरचनात्मक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें मध्यप्रदेश के स्कूलों का बेहतर प्रदर्शन प्रदर्शित हुआ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में मध्यप्रदेश को उत्कृष्ट राज्य बनाने के लिए विभिन्न स्तरों पर कार्ययोजना और रणनीतियां बनाने के निर्देश दिये हैं।

उल्लेखनीय है कि भारतीय स्कूल शिक्षा व्यवस्था दुनिया में सबसे बड़ा शिक्षा नेटवर्क है। इसमें 14 लाख 72 हजार स्कूल है, जिसमें 98 लाख से ज्यादा शिक्षक हैं और प्राथमिक से सेकेंडरी स्तर तक 24.8 करोड़ विद्यार्थी पढ़ रहे हैं जो विभिन्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं।

स्कूलों के इस विशाल डाटाबेस के प्रबंधन के लिए केन्द्र सरकार ने यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉरमेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस बनाया है। इसमें स्कूलों से संबंधित आंकड़ों को ऑनलाइन अपलोड किया जाता है। कई स्तरों पर आंकड़ों की शुद्धता का परीक्षण किया जाता है। यह कार्य ब्लॉक, जिला और राज्य स्तर पर होता है। यह वन नेशन-वन डाटाबेस की अवधारणा है।

मप्र की स्थिति- रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश में सरकारी, निजी और सरकारी सहायता प्राप्त 1,23,412 स्कूल हैं, जिनमें एक करोड़ 53 लाख 61 हजार 543 विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। इन स्कूलों में शिक्षकों की संख्या 6 लाख 39 हजार 525 है। इनमें सरकारी स्कूल 92,439 हैं और सरकारी सहायता प्राप्त 581 और निजी 28,910 और अन्य 1482 हैं। इनमें से 39.4प्रतिशत स्कूल प्रिपेरेटरी या फाउंडेशनल है जबकि 35.7प्रतिशत मिडिल स्कूल और 14.9प्रतिशत हायर सेकेंडरी स्कूल है। शिक्षकों की उपलब्धता के मान से 21.02प्रतिशत फाऊंडेशनल स्कूलों में, 37.9प्रतिशत मिडिल स्कूलों में और 40.9 प्रतिशत सेकेंडरी स्तर के स्कूलों में कार्यरत है।

राष्ट्रीय परिदृश्य- रिपोर्ट के अनुसार देश के 98.3 प्रतिशत स्कूलों में पेयजल की सुविधा है, 97.2 प्रतिशत स्कूलों में बेटियों के लिए टॉयलेट, 95.7 प्रतिशत स्कूलों में बच्चों के लिए टॉयलेट, 94.7 प्रतिशत स्कूलों में हाथ धोने की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा 91.8 प्रतिशत स्कूलों में विद्युत व्यवस्था है, 89 प्रति. स्कूलों में लाइब्रेरी है, 82.4प्रति. स्कूलों में खेल का मैदान है, 75.2प्रति. स्कूलों में चिकित्सीय परीक्षण की सुविधा है जबकि 57.2 प्रतिशत स्कूलों में कंप्यूटर की सुविधा है और 53.9 प्रतिशत स्कूलों में इंटरनेट की सुविधा है।

रिपोर्ट के अनुसार 52.3 प्रतिशत स्कूलों में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए रैंप की सुविधा, 36.2 प्रतिशत स्कूलों में किचन गार्डन, 34.4 प्रतिशत स्कूलों में विकलांग विद्यार्थियों के लिए टॉयलेट की सुविधा है। अन्य व्यवस्थाओं में 28.4 प्रतिशत स्कूलों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग और 10.5प्रतिशत स्कूलों में सोलर ऊर्जा के सिस्टम लगे हैं।

सीएम राइज स्कूलों ने जोड़ा नया अध्याय- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए नई शिक्षा नीति का पालन करते हुए विद्यार्थियों को रोचक और आनंददायी शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। सीएम राइज योजना में 9200 विद्यालयों को दो चरणों में आधारभूत सुविधाओं से संपन्न बनाया जा रहा है। दूसरे चरण के लिए 2024-25 में 276 विद्यालयों को संसाधन संपन्न बनाया जाएगा। इनमें केजी से 12 वीं तक कक्षाएं लगेंगी।

प्रथम चरण में स्वीकृत हुए 274 सीएम राइज स्कूलों में से 22 के भावनों का निर्माण हो चुका है। प्रत्येक स्कूल भवन की लागत न्यूनतम 31 करोड रुपए। इनकी डिजाइनिंग प्रतिष्ठित वास्तुविदों ने की है। स्कूलों में आधुनिक लैब सुसज्जित कक्षा, खेल सुविधाएं, स्मार्ट क्लासरूम, निशुल्क परिवहन जैसी व्यवस्थाएं हैं। बुनियादी सुविधाएं मजबूत होने से इन स्कूलों के परीक्षा परिणामों में भी निरंतर सुधार हो रहा है।

शासकीय सीएम राइज विनोबा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रतलाम को अंतरराष्ट्रीय संस्था टी4 एजुकेशन ने नवाचार की श्रेणी में विश्व में प्रथम स्थान दिया है।

इसके अलावा मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार ने विभिन्न स्तरों के विद्यालयों को पीएम श्री योजना में शामिल कर लिया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने सीहोर के मनोहर मेवाड़ा से किया संवाद

सम्पत्ति कार्ड से मिला लोन, डेयरी फार्म किया शुरू, परिवार की स्थिति हुई सुदृढ़

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को स्वामित्व योजना अंतर्गत सम्पत्ति कार्ड के ई-वितरण कार्यक्रम में सीहोर जिले की ग्राम पंचायत पीपलिया मीरा के हितग्राही मनोहर मेवाड़ा से वर्चुअल संवाद किया। प्रधानमंत्री मोदी ने मनोहर से स्वामित्व योजना में मिले सम्पत्ति कार्ड से उनके जीवन में आये बदलाव की जानकारी ली।

हितग्राही मनोहर मेवाड़ा ने बताया कि जब उनके पास अपनी जमीन का कोई कागज नहीं था। तब कोई भी बैंक हमें लोन नहीं देता था। स्वामित्व योजना में सम्पत्ति कार्ड मिल जाने से हमें आसानी से 10 लाख का लोन मिल गया। लोन से हमने डेयरी फार्म शुरू किया, जिसमें 5 गाय और एक भैंस है। प्रतिमाह 30 हजार रूपये की आमदनी हो रही है, जिसमें 16 हजार रूपये नियमित रूप से बैंक की किस्त भी जमा कर रहे हैं। डेयरी फार्म में मेरा परिवार भी सहयोग कर रहा है। खेती के साथ पशुपालन से होने वाली आय हमारे परिवार के लिये लाभप्रद हो रही हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने हितग्राही श्री मनोहर का अनुभव सुन कर कहा कि मुझे खुशी है कि स्वामित्व योजना से आपके जीवन की मुश्किलें कम हुई हैं। मुझे यह देख कर अच्छा लगा कि केन्द्र सरकार की स्वामित्व जैसी योजनाओं से आप जैसे लाखों लोगों की आमदनी बढ़ रही है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारी प्राथमिकता है कि देश के हर नागरिक का शीश गर्व से ऊँचा रहे और उसके जीवन में सुगमता आये। प्रधानमंत्री मोदी ने मनोहर मेवाड़ा से कहा कि वे अपने गाँव के अन्य हितग्राहियों को भी स्वामित्व योजना के लाभ से अवगत करायें।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सिवनी में प्रबुद्धजनों से विकास एवं अन्य मुद्दों पर संवाद किया।

भोपाल के हमीदिया अस्पताल में वार्ड बॉय की हड़ताल

मरीज और उनके परिजनों खुद खींच रहे स्ट्रेचर व्हील चेयर

भोपाल (नप्र)। हमीदिया अस्पताल में वार्ड बॉय, लैब टेक्नीशियन और कंप्यूटर ऑपरेटर की हड़ताल जारी है। शनिवार को भी यह वार्ड बॉय लगातार अस्पताल परिसर में हड़ताल करते दिखे। हमीदिया हॉस्पिटल मैनेजमेंट ने 400 कर्मचारियों को हटाने की तैयारी शुरू कर दी है। इस बीच 50 से अधिक कर्मचारियों को इस महीने की 20 तारीख तक सेवा समाप्ति के लेटर दिए जा चुके हैं।

कर्मचारी लगातार अस्पताल परिसर में नारेबाजी कर रहे हैं। हड़ताल में वार्ड बॉय और लैब टेक्नीशियन सहित अन्य कर्मचारी शामिल हैं। डीन कविता एन. सिंह ने पहले कहा था कि शासन से

स्वीकृत पदों के मुकाबले हमीदिया में 400 कर्मचारी अधिक हैं। वर्तमान में शासन द्वारा स्वीकृत पदों के आधार पर ही निर्णय लिया जाएगा।

मरीज के परिजन हुए परेशान- हमीदिया अस्पताल में मरीजों के परिजनों को वार्ड बॉय नहीं होने के चलते परेशानियों का समाना करना पड़ रहा है। परिजन स्ट्रेचर और व्हील चेयर खींचते नजर आए, इसके अलावा मरीजों के परिजनों ने बताया कि वार्ड बॉय नहीं थे जिसके चलते हमें यह व्हील चेयर खींचनी पड़ रही है। इससे पहले शुक्रवार को वार्ड बॉय ने कलेक्टर भोपाल को इस संबंध में ज्ञापन दिया।

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
लेखक व्यंग्यकार हैं।

साधु का जादू और राजा का राज

बात पुरानी है, एक ऐसा राज्य था जहाँ राजा की मूँछें ऐसे तनी हुई थीं जैसे शेर की दाढ़ी हो। आँखें वो तो बस बंद थीं, जैसे नींद में हों। प्रजा की तो धुन थी, भाई, प्याज की महंगाई का बवाल है। लेकिन राजा साहब? प्याज महंगा? कहाँ है? हमें तो दिखा ही नहीं! ये सुनकर दरबारी लोग फटाफट हाँ में हाँ मिलाने लगे। जहाँ राजा को कुछ नहीं दिखता, वहाँ हमें कैसे दिखेगा, हुजूर?

राजा साहब मन ही मन मुस्कुरा रहे थे, चलो, अगर कहीं दिख जाए, तो हमारे लिए एक नमूना ले आना। हम भी तो देखें कि प्याज महंगा दिखता कैसा है!

राजा ने विशेषज्ञ जाति के पाँच तगड़े लोगों को बुलाया। इनको तो आँखें भी ऐसी मिलती थीं जो हर छोटी-छोटी चीज़ को देख सकती थीं। राजा ने कहा, जाओ और पूरे राज्य में ढूंढो, प्याज का नमूना लाओ!

विशेषज्ञों ने धड़ाधड़ काम शुरू किया। दो महीने बाद दरबार में हाजिर हुए। राजा ने पूछा, प्याज मिला?

विशेषज्ञों ने सिर हिलाते हुए कहा, जी हुजूर, बहुत सारा। पर ये बड़ा नहीं, बहुत सूक्ष्म है। ये तो हर जगह फैला हुआ है, जैसे कोई भूत!

राजा बोले, तो क्या प्याज अब भूत हो गया है?

विशेषज्ञ बोले, जी महाराज, बिलकुल सही कहा। ये बाजार से लेकर दरबार तक, हर जगह है!

राजा तो घबरा गए। अब बताओ, ये प्याज की महंगाई मिटेगी कैसे?

विशेषज्ञों ने एक धमाकेदार योजना बनाई। बोले, सारे ठेके बंद कर दो। सब्जी वाले बाहर हो जाएंगे, तो प्याज अपने आप सस्ता हो जाएगा। पूरी व्यवस्था को बदलना होगा!

दरबारी लोग तुरंत विरोध करने लगे। बोले, महाराज, ये तो राज्य की जड़ें हिला देगा। हमें तो कुछ ऐसे उपाय चाहिए जिससे बिना कुछ बदले सब ठीक हो जाए!

तभी दरबार में एक साधु को लाया गया। साधु ने झोली से चमचमाता तावीज़ निकाला। यह प्याज का तावीज़ है। इसे बाँधने से आदमी खुद-ब-खुद सस्ते प्याज खरीद सकेगा।

राजा ने पूछा, कैसे? साधु बोला, भाई, मनुष्य की आत्मा से महंगाई और सच्चाई के स्वर निकलते हैं। यह तावीज़ महंगाई के स्वर को दबाकर सस्ते प्याज के स्वर निकालता है। इसे पहनने वाला कुत्ता भी महंगी सब्जी नहीं चुराएगा!

दरबार में तालियाँ बजने लगीं। राजा ने तुरंत आदेश दिया कि यह तावीज़ पूरे राज्य में बाँटा जाए।

कई महीनों बाद फिर से हलचल मच गई। तावीज़ पहनने वाले लोग दरबार में आए। बोले, महाराज, ये तावीज़ तो हमें सस्ते प्याज तो दिला रहा है, पर अब पेट कैसे भरें?

राजा सोच में पड़ गए। आखिरकार, तावीज़ का प्रयोग बंद करने का फैसला किया। बोले, प्याज की महंगाई से तो हमारी व्यवस्था चलती है। इसे हटाना मतलब राज्य का संतुलन बिगाड़ना है।

साधु मुस्कुराते हुए बोला, महाराज, यही तो सच है। प्याज अब ईश्वर जैसा है–अगोचर, सूक्ष्म, और सर्वव्यापी।

आखिर में, राजा ने तावीज़ को दरबार की शोभा बना दिया। वो अब तक सिंहासन के ऊपर टँगा है, जैसे राज्य की आत्मा को सजगता से देख रहा हो। और प्याज? वो अब भी सर्वव्यापी है–राजा के सिंहासन से लेकर प्रजा की थाली तक।

कविता

ख्यालों से चलो

कमलेश कुमार दीवान

तुम कहीं दूर बहुत,अपने ख्यालों से चलो।
गम के सायों से चलों अपने सवालों से चलो।।
ये दुनिया भी एक ताबीज की मानिंद ही है।
अपने जज्बात और आते उजालों से चलो।।
बहुत कुछ पाया है हमने भी इसी दुनिया से।
अपनी फितरत है सहो पांव के छालों से चलो।।
मैं नहीं,वो नहीं ये कौन है जो थम सा गया।
तुम चलो हम भी चलें उनके हवालों से चलो।।
दुनिया वाले भी ऐसे ही रोकते रहते 'दीवान'।
उठाओ तेज कदम अपनी ही चालों से चलो।।

गजल

सुधीर कुमार सोनी

उसको लगी थी नींद ,पत्थर तराश कर
पत्थर में सो गया वह ,पत्थर तराश कर ।

उसका न कोई घर, न कोई भी ठिकाना
पत्थर सा हो गया वह, पत्थर तराश कर ।

छोटी सी एक गठरी ,उसकी है सारी दुनिया
कुछ ज्यादा मिल सका न, पत्थर तराश कर ।

जाता है जहाँ भी वह, पत्थर के काम से
पत्थर में ही लौटता है, पत्थर तराश कर ।

साथी न कोई उसका, न कोई भी सहारा
पत्थर से निभाता रिश्ता, पत्थर तराश कर ।

मेरे-तुम्हारे अपनों से, होती हजार बातें
पत्थर से बोलता है वह,पत्थर तराश कर ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कहानी

सुनील कुमार महला

सौंधी मिट्टी की खुशबू

करीबन पच्चीस-तीस साल पहले ही विनय रोज़गार के लिए अपने गांव से शहर में आकर बस गया था। विनय एक सेठ के यहां कंपनी में अकाउंटेंट की नौकरी करता था। खेती-बाड़ी गांव में थी, लेकिन खेती-बाड़ी से परिवार का गुजर-बसर नहीं हो रहा था, इसलिए विनय अपने पिताजी गंगाधर से आज्ञा लेकर नौकरी की तलाश में शहर में आ गया था। विनय के तीन भाई और दो बहनें थीं। उसके पिताजी गंगाधर ने अपनी दोनों बेटियों की शादी जैसे-तैसे कर दी थी, लेकिन उनके दो बेटे गांव में रहकर ही खेती-बाड़ी किया करते थे। विनय ने शहर में सेठ के यहां उसकी कंपनी में अकाउंटेंट की नौकरी करते हुए दिन-रात खूब मेहनत की, और समय के साथ उसकी तनख्वाह भी सेठ ने बढ़ा दी थी और इसके चलते विनय ने शहर में ही एक प्लाट खरीदकर जल्द ही उस पर अपना मकान भी बना लिया था।

अब विनय अपने भरे-पूरे परिवार के साथ जिसमें उसकी धर्मपत्नी उषा, अपने दो बेटों साहिल और विनोद तथा एक बेटी अनुष्का शामिल थी, शहर में आराम की जिंदगी गुज़र-बसर कर रहे थे। विनय के तीनों बच्चे बड़े हो गए थे और बेटी प्रियंका कालेज में तथा दोनों बेटे रेहान और धवन स्कूल में पढ़ रहे थे। गांव में जब कभी भी कोई फंक्शन वगैरह, पार्टी, सवामणी, मरग होती तो उस समय तथा खेती-बाड़ी संभालने के लिए ही छुट्टियों में विनय और उसके बच्चे कभी-कभार गांव जाते थे। हालांकि, गांव में उनका मन भी पहले की भांति अब नहीं लगता था, लेकिन विनय के बच्चों की अपने दादा-दादी, चाचा-चाची से मिलने तथा खेत-खलिहान देखने का मन बहुत बार होता था। अपने दादाजी गंगाधर से, विनय के तीनों ही बच्चे बहुत प्यार करते थे। एक दिन की बात है, वे अपने दादाजी को शहर में उनके यहां लाने की जिद करने लगे। गंगाधर पिचहतर बरस का था। सफेद बाल, दाढ़ी-मूंछ, गेहूंआ रंग, माथे पर सलवटें, झुर्रीदार हाथ-पैर लेकिन लंबे डील-डौल वाला गंगाधर गांव की आबोहवा में ही खुश रहता था। शहर में उसका मन बिल्कुल भी नहीं लगता था।

वह सुबह-शाम अपने खेतों में जाता, पशुओं को हरा-चारा डालता, अपनी खेती-बाड़ी को देख खुश होता और सादा जीवन जीता था। गांव में हरे-भरे पूरे खेत, वो लहरदार पगडंडियां, हरी घास के मैदान (चरागाहें), खुला घर-आंगन, घर के पिछवाड़े में खड़े आम और नीम के पेड़, इन पेड़ों पर गिलहरियों, रंग-बिरंगी चिड़ियों, कौओं की कांव-कांव और घर के पिछवाड़े में ही एक तरफ कोने में बनी फुलवारी पर मंडराती रंग-बिरंगी तितलियां,भंवरे, मधुमक्खियां गंगाधर के मन को खूब भाती थीं और गंगाधर को इनमें बहुत सुकून,चैन मिलता था।दिन के समय गंगाधर गांव-गुवाड़ में शिव मंदिर के पास बने वट वृक्ष पर ताश खेलने को भी अक्सर चला जाता था। गांव की आबो-हवा में रहकर वह बेहद खुश और संतुष्ट था। शहर की ज़िन्दगी उसे भारी-भारी सी लगती थी, क्यों कि कभी-कभार वह घरेलू रोज़मर्रा की ज़रूरत का सामान खरीदने गांव से बस में शहर जाया करता था।

गंगाधर को यह मालूम था कि शहर अनाप-शनाप प्रदूषण से संलिप्त हैं। जहां पर न तो प्रकृति के गीत गाती हवाएं हीं थीं और न ही लहलहाते खेत। कुंजन करती कोयल, कलरव करते पंछियों का ठौर शहर में मिलता कहां हैं ? न खेतों की लहरदार पगडंडियां शहरों में हैं और न ही कच्चे रास्ते। न ट्यूब-वेल का मीठा गुनगुना पानी है और न ही गोधूलि का वातावरण।मिट्टी की खुशबू तो शहरों में नदारद ही होती है। गंगाधर जानता था कि गांवों में संस्कारों की, फूलों की रमणीक महक है। उसे अच्छी तरह से यह बात पता थी कि आज के शहरी घरों या अपार्टमेंट्स में पाए जाने वाले हरी घास के नन्हें लॉन, पार्क आदि का गांव के चरागाहों-उपवनों, पगडंडियों से क्या मुक़ाबला ? गंगाधर कई बार यह सोचा करता था कि उसकी बहू-बेटा, पोता-पोती कैसे सीमेंटी-कंक्रीटी घर में, नकली हरी घास, नकली फूलों के गुलदस्तों के बीच चहारदीवारी में आखिर कैसे जिंदगी बसर करते हैं? उसकी नज़र में आधुनिक सुख-सुविधाएं, शहरी जीवनशैली, ये सब आदमी के मन को सुकून-चैन तो देते नहीं हैं। फिर भी पोते-पोती की जिद के आगे वह बिल्कुल भी टिक न सका और आठ-नौ घंटे का सफर करते हुए वह शहर में अपने बेटे विनय के यहां उसके घर पहुंच गए। बहू उषा ने अपने श्वसुर गंगाधर की बहुत आवभगत और सेवा-सुश्रुषा की।

उषा पिताजी को सुबह-शाम वक्त पर चाय पकड़ा देती, समय पर खाना-पीना कर देती। बिस्तर जंचा देती। हुक्का भी रख देती। वे जाड़े के दिन थे। ठंड अपने परवान चढ़ रही थी, इसलिए उषा ने पिताजी(श्वसुर) गंगाधर को उनके कमरे में ब्लोवर, हीटर भी उपलब्ध करवा दिए , ताकि उन्हें ठंड में कोई दिक़त परेशानी न होने पाए। विनय का सबसे छोटा बेटा साहिल अपने दादाजी को सुबह-शाम शहर के पार्क में घूमाने ले जाया करता। शाम को समाचारों के लिए दादाजी के लिए वह टीवी लगा देता।इस तरह से समय कटता चला जा रहा था। गंगाधर को गांव से शहर आये अब पन्द्रह-बीस दिन बीत चुके थे।

साहिल(छोटा पोता) अब उन्हें (गंगाधर को) घुमाने पार्क में नहीं ले जाता, क्यों कि उसके पिताजी विनय ने प्रदूषण के कारण ऐसा करने के लिए मना किया है। विनय ने साहिल से कहा है आजकल शहर में प्रदूषण बहुत है, पिताजी की सेहत का ज़रा ध्यान रखना। गंगाधर आजकल सुबह-शाम टीवी देखते हैं तो कभी-कभार अखबार पढ़कर अपना टाइम-पास करते हैं। पिछले कुछ दिनों से तो वे मंदिर भी नहीं जा पाए हैं। गांव में अक्सर मंदिर की तरफ आना-जाना हो जाया करता था। शहर में आकर उनकी जीवनशैली जैसे पूरी तरह से बदल-बदल सी गई है। यहां शहर में लोग रात को देरी से सोते हैं और सुबह देरी से उठते हैं। गंगाधर उस दिन कमरे में बैठे-बैठे शायद यही सोच रहा था कि आखिर कौन छोड़ना चाहता है घर, रोटी की ख़ातिर निकल पड़ते हैं शहर....! शहर में बसना आज जैसे आदमी की मजबूरी हो गई है। नौकरी के कारण परिवार भी बिखर-बिखर से गये हैं।

शहर आकर गांव-गुवाड़, खेत-खलिहान छूट चुके हैं।गंगाधर यह सब सोच ही रहा था कि तभी गंगाधर की पोती प्रियंका ने उसकी तंद्रा तोड़ी और अपने दादाजी के पास आते हुए प्रियंका ने कहा - %दादाजी आज टीवी पर शायर बशीर बद्र जी का कार्यक्रम चल रहा है। आइए ! आप और हम दोनों इसे देखते हैं। बहुत ही अच्छा व सुंदर कार्यक्रम है और हां दादाजी मैं तो बशीर बद्र जी की बड़ी फैन हूं। प्रियंका के दादाजी गंगाधर ने हामी में बेमन से सहमति में अपना सिर हिलाया और पोती प्रियंका को टीवी चलाने की अनुमति प्रदान कर दी। टीवी चलाते ही उस पर बज रहा था- है अजीब शहर की ज़िंदगी न सफ़र रहा न क़याम है,कहीं कारोबार सी दोपहर कहीं बद-मिज़ाज सी शाम है...! प्रियंका और उसके दादाजी टीवी देख रहे थे। तभी प्रियंका की मम्मी उषा अपने श्वसुर के लिए शाम की चाय लेकर कमरे में पहुंचीं। गंगाधर ने चाय का कप उठाया और चुस्कियां लेने लगा। चाय की चुस्कियां लेते हुए शायद आज गंगाधर के मन में 'गांव की सौंधी मिट्टी' की खूशब दौड़ रही थी।

व्यंग्यिका

अनुपमा श्री

इन दिनों जो
पढ़ने में आती है
लिजलिजी,
कुछ ज्यादा खुली,
बखिया उधड़ी सी,
काव्य सौंदर्य
प्रतिमानों को
भग्न करती!
काव्य तत्वों को
ध्वस्त करती,
बोझिल,बेजान
अपठित गद्य सी,
किसका अक्स !
किस भविष्य की तस्वीर सी!
किस मानस विद्रूप
से झरी ऐसी ...
ये कविता है कैसी !!

पुस्तक समीक्षा

संजीव जायसवाल 'संजय'

भीगते सावन: जीवन की विविध छवियों का समग्र प्रस्तुतिकरण

सुरेश सौरभ का कहानी-संग्रह 'भीगते सावन'साहित्यिक जगत में एक ताजगी भरा प्रयास है, जो मानवीय संवेदनाओं, पारिवारिक संबंधों, और सामाजिक मुद्दों को गहराई से उकेरता है। यह संग्रह न केवल भावनात्मक अनुभव प्रदान करता है, बल्कि पाठकों को सोचने और जीवन के गूढ़ पहलुओं को समझने का भी अवसर देता है। कुल 11 कहानियों का यह संग्रह भाषा, शिल्प, और संवेदनशीलता के मेल से तैयार एक उत्कृष्ट साहित्यिक कृति है।

सुरेश सौरभ ने पिछले एक दशक में साहित्य की विभिन्न विधाओं में उल्लेखनीय प्रगति की है। विशेष रूप से लघुकथा की विधा में उनका नाम स्थापित हो चुका है। उनकी रचनाएँ पाठकों के दिलों को छूने वाली होती हैं और सामाजिक मुद्दों पर गहन प्रभाव डालती हैं। उन्होंने कई संग्रहों का सफलतापूर्वक संपादन किया है, जो पाठकों के बीच बेहद लोकप्रिय हुए। उनकी कहानियाँ पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, और साहित्यिक मंचों पर प्रकाशित होकर व्यापक सराहना प्राप्त कर चुकी हैं।

उनकी कृतियों में विषय की विविधता, शैली की सादगी, और संवेदनशीलता का ऐसा मेल है, जो उन्हें साहित्य के क्षेत्र में विशेष स्थान दिलाता है।सुरेश सौरभ की भाषा सरल, प्रभावशाली और स्वाभाविक है। उनकी कहानियों में ऐसी सादगी और प्रवाह है, जो पाठकों को शुरू से अंत तक बाँधकर रखती है। लेखक ने अपनी भाषा को आम पाठकों के लिए सुलभ रखा है। कहीं भी शब्दाडंबर या जटिलता का बोझ नहीं है, जो कहानियों को और भी प्रभावी बनाता है।कहानियों के वर्णन इतने सजीव हैं कि पाठक उनके पात्रों और घटनाओं को अपनी आँखों के सामने घटित होते हुए देख सकते हैं। उनके संवाद संक्षिप्त, सटीक और प्रभावशाली हैं, जो पात्रों की मानसिकता और घटनाओं की तीव्रता को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करते हैं।

इस संग्रह की कहानियाँ विषयों की दृष्टि से विविध हैं। पारिवारिक रिश्तों की उलझनें, सामाजिक विडंबनाएँ, और परंपरागत मूल्यों की पुनर्स्थापना इनमें प्रमुखता से उभरकर सामने आती हैं। ये कहानियाँ पाठकों को भावनात्मक रूप से झकझोरती हैं और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर सोचने को प्रेरित करती हैं।

'एक था ठठेरा' संग्रह की पहली कहानी है, जो एक विलुप्त हो रही एक परंपरा और कला के संघर्ष को मार्मिकता से प्रस्तुत करती है। कहानी का मुख्य पात्र एक वृद्ध ठठेरा है, जो अपने सुनहरे अतीत की यादों में खोया हुआ है। उसने अपने जीवन में ढेर सारी प्रशंसा और सम्मान कमाया था, लेकिन अब आधुनिकता की दौड़ में उसकी कला हाशिए पर चली गई है। जब एक महिला अपने बेटे को बचाने के लिए उसकी सहायता माँगती है, तो कहानी एक अप्रत्याशित मोड़ लेती है।ठठेरे का आत्म-सम्मान और उसका संघर्ष पाठकों को भीतर तक झकझोर देता है।यह कहानी परंपराओं के संरक्षण और मानवीय प्रयासों की शक्ति का प्रतीक है।

'विश्वास लौट आया' कहानी पारिवारिक रिश्तों की जटिलता और आत्म-साक्षात्कार की कथा है। मुख्य पात्र, एक आईएएस अधिकारी, अपने माता-पिता की उपेक्षा करता है। लेकिन जब उसे पता चलता है कि वह गोद लिया हुआ बेटा है, तो उसका हृदय परिवर्तन होता है।कहानी में पिता के संघर्ष और बेटे के अहंकार को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है। जब बेटे को अपनी जड़ों का अहसास होता है, तो वह अपनी गलतियों का प्रायश्चित करता है। यह कहानी पाठकों को पारिवारिक मूल्यों और त्याग का महत्व समझाती है तथा रिश्तों में

आपसी समझ और आदर की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

संग्रह की शीर्षक कहानी, 'भीगते सावन,' युवावस्था की भावनाओं और संघर्षों की कहानी है। यह कहानी एक ऐसी स्मृति की बात करती है, जब नायिका मूसलाधार बारिश में फँस जाती है।

कहानी बरसात के दिन की स्मृतियों के माध्यम से नायिका की भावनाओं और अतीत के अनुभवों को जिस तरह सामने लाती है, उससे नायक के दृढ़ चरित्र और नायिका की संवेदनशीलता का सुंदर चित्रण है।यह कहानी कठिन परिस्थितियों में आत्म-नियंत्रण और मानवीय संबंधों की सुंदरता को दर्शाती है।

'रैली' कहानी राजनीति और समाज की विडंबनाओं पर गहरा कटाक्ष करती है। यह दिखाती है कि कैसे नेताओं की चालबाजियों का खामियाजा आम जनता को भुगतना पड़ता है। 'प्रकाश चला गया' पारिवारिक विवाद और एक छोटे से थप्पड़ के भयंकर परिणाम को प्रस्तुत करती, यह कहानी पाठकों को सोचने पर मजबूर कर देती है।'औलाद के आँसू'बुजुर्ग माता-पिता की उपेक्षा और उनकी पीड़ा का मार्मिक चित्रण इस कहानी की आत्मा है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि 'भीगते सावन' केवल मनोरंजन के लिए नहीं लिखा गया है, बल्कि यह समाज की कड़वी सच्चाइयों को उजागर करने का एक प्रयास है। सुरेश सौरभ का यह संग्रह भाषा, कथानक और भावनात्मक गहराई के कारण साहित्य प्रेमियों के लिए एक अनमोल उपहार है। इसकी सरल और प्रवाहमय भाषा हर वर्ग के पाठकों को प्रभावित करती है। कहानियों के कथानक विविधता और भावनात्मक गहराई से भरपूर हैं।

'भीगते सावन'एक ऐसा संग्रह है, जो साहित्य प्रेमियों के दिलों में जगह बनाने में सफल है। यह संग्रह न केवल मनोरंजक है, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक चेतना का भी अद्भुत उदाहरण है। सुरेश सौरभ की लेखनी में पाठकों को भावनाओं और संवेदनाओं का अद्वितीय अनुभव मिलता है। मैं इस संग्रह की सफलता के मंगल कामना करता हूँ।

पुस्तक-भीगते सावन (कहानी संग्रह)
लेखक- सुरेश सौरभ
प्रकाशन- अद्विक प्रकाशन नई दिल्ली।
मूल्य-160

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कलाकृतियां, कलाकार एवं भारतीय जनमानस

कला के प्रति अधिकतर के मन में वो मोह-माया नहीं दिखता जो दिखना चाहिए। कला के प्रति जागरूकता में कमी या फिर कुछ तो है जो कहीं दरक रहा है जिससे कला आम जन तक पहुंच बना पाने में असमर्थ दिख रही है। पेंटिंग तो मेरे समझ में ही नहीं आती कहकर खुद का पीछा छुड़वा लेना आम हो गया है, जबकि देखा जाय तो बचपन से ही अमूर्त ही सही, कला सभी के साथ होती है। बच्चा जब लिखना भी नहीं जानता तभी से कृतियां बनाने लगता है। क्या ऐसा कोई है जो आड़ी-तिरछी रेखाओं के बिना सीधे लिखना-पढ़ना शुरु कर दिया हो। बच्चे जहां भी मौका पाते है कुछ न कुछ जरूर बनाने लग जाते हैं फिर चाहे दीवार हो, जमीन हो या कोई भी धरातल। शिक्षा की शुरुआत ही कला से होती है, बच्चों के शरारत, गोंचा-गांची सभी के पीछे कला ही तो खड़ी होती है। कला पग-पग पर होती है, कला के बिना, विशेषतः मनुष्य का जीवन तो संभव ही नहीं है।

समय ऐसा है कि हर काम के साथ ही लोग अब अपने शरीर, मन मस्तिष्क को समय-समय पर आराम देने की भी सोचने लगे हैं, उनके तमाम कार्यक्रमों में इसे पर्याप्त समय मिलने लगा है। लोग हजारों खर्च करके सिनेमा देखने जाते है, सिनेमा में खुद को ढूंढने का प्रयास करते हैं, उससे जुड़ने का भी प्रयास करते हैं। तमाम तरह के और भी उत्सव में शरीक होते हैं और खुलकर खुले आकाश में विचरना चाहते हैं। वर्ष में कम से कम एक बार कहीं भी घूमने का प्लान भी करते हैं और परिवार के साथ आनंद के खोज में लगे रहते हैं जबकि वहीं कला के प्रति उन सभी में व्याप्त उदासीनता से मन विचलित हो उठता है, कुछ तो होता है जो मन में खटकता रहता है। कला के प्रति अधिकतर के मन में वो मोह-माया नहीं दिखता जो दिखना चाहिए। कला के प्रति जागरूकता में कमी या फिर कुछ तो है जो कहीं दरक रहा है जिससे कला आम जन तक पहुंच बना पाने में असमर्थ दिख रही है। पेंटिंग तो मेरे समझ में ही नहीं आती कहकर खुद का पीछा छुड़वा लेना आम हो गया है, जबकि देखा जाय तो बचपन से ही अमूर्त ही सही, कला सभी के साथ होती है। बच्चा जब लिखना भी नहीं जानता तभी से कृतियां बनाने लगता है। क्या ऐसा कोई है जो आड़ी-तिरछी रेखाओं के बिना सीधे लिखना-पढ़ना शुरु कर दिया हो। बच्चे जहां भी मौका पाते है कुछ न कुछ जरूर बनाने लग जाते हैं फिर चाहे दीवार हो, जमीन हो या कोई भी धरातल। शिक्षा की शुरुआत ही कला से होती है, बच्चों के शरारत, गोंचा-गांची सभी के पीछे कला ही तो खड़ी होती है। कला पग-पग पर होती है, कला के बिना, विशेषतः मनुष्य का जीवन तो संभव ही नहीं है। उसके साथ घट रही अधिकतर क्रियाओं में कला होती है हां उसे पहचान पाना या ना पाना, परिभाषित कर पाना या ना कर पाना ये अलग बात है। दीर्घाओं में प्रदर्शित कलाओं के साथ भी कुछ ऐसा ही है। कृतियां कला से ओतप्रोत होती हैं हां ये बात अलग है कि देखने वालों को समझ आये या नहीं।

आसमान में उमड़ते-घुमड़ते बादलों के बदलते तमाम रूपों से कौन नहीं परिचित होगा? अनजाने ही सही हमारे आंखों के सामने बनी किसी भी आकृति को हम किसी न किसी रूप में जोड़कर देखने लग जाते हैं जो पहले तो अमूर्त नजर आती है पर थोड़ी ही देर में मूर्त रूप अख्तियार कर लेती है और हमारे दिलों दिमाग पर छा जाती है। कहने का मकसद बस इतना है कि किसी भी वस्तु, लोग या स्थान को समझने हेतु समय देना पड़ता है तब जाकर उसके बारे में जानकारी और उसकी विशेषता से परिचित होने का सौभाग्य नसीब हो पाता है फिर कला को लेकर ऐसा अन्यायपूर्ण रवैया क्यूं? क्यूं हममें से अधिकतर तो गैलरियों में जाते ही नहीं और यदि भूलवश कोई पहुंच भी गया तो ऐसा महसूस करता है जैसे हमने बहुत बड़ा अन्याय कर दिया हो। वहां के लोग ऐसे नजर आते हैं जैसे किसी अन्य लोक से आया वासी हो।

क्या हम अपने परिवार के साथ कला दीर्घा में पहुंच कर कृतियों पर घण्टों चर्चा नहीं कर सकते? क्या अपने बच्चों को कला, कलाकार एवं कला दीर्घाओं से परिचित नहीं करा सकते। क्या कलाकारों के जीवन से प्रेरणा लेने की बात हम बच्चों में नहीं जगा सकते? बच्चों के शिक्षा और कैरियर के संबंध में भी हम कला से दूरी क्यों बना लेते हैं जबकि हर परिस्थिति, हर मायने में कला हमारे साथ हमारे अनुकूल ही होती है।

विदेशों में कला एवं कलाकारों के प्रति ऐसी दीवानगी है कि लोग महीनों पहले से ही प्रर्दशनी में जाने की तैयारी करने लग जाते हैं। कलाकारों का सम्मान इतना कि उन्हें विशेष कार्यक्रमों में विशिष्टता की भूमिका में निमंत्रित करते हैं। कृतियों पर घंटों चर्चा करते हैं। कलाकारों के साथ फोटो खिंचवा कर खुद पर गर्व करते हैं। दीर्घाओं में प्रवेश हेतु बाकायदा टिकट भी खरीदते हैं। अपने यहां शायद ही किसी कला दीर्घा में टिकट लगता हो बावजूद इसके बड़ी से बड़ी दीर्घाओं में, बड़े से बड़े कलाकारों के प्रर्दशनी में भी अंगुलियों पर गिनने वाली संख्या होती है। दीर्घाओं में दर्शकों के न पहुंच पाने के पीछे कहीं टिकट का न लगना तो नहीं है यह भी सोचने वाली बात हो सकती है कारण टिकट के बाद लोग गर्व से और बिना डरे-सहमे घूम सकते हैं, पैसा जो टिकट में लगा है उसे वसूलने के उद्देश्य से समय भी ज्यादा देंगे और इसी बहाने कृतियों से संवाद का समय भी बढ़ेगा और धीरे-धीरे परिस्थिति भी बदलने लगेगी। गैलरियों को अपने आने वाले प्रदर्शनियों और कलाकारों को लेकर प्रचार-प्रसार करने का खर्चा भी मिलेगा और व्यवस्था में भी सुधार को सोचा जा सकेगा।

कला को लेकर भारतीय जन में इतनी उदासीनता है कि कलाकार जो सिर्फ और सिर्फ कलाकृतियां बेचकर ही जीवन यापन कर रहा है, को जीवन बड़ी जद्दोजहद के साथ गुजारनी पड़ती है, कभी-कभी तो खर्चे को भी समस्या आन पड़ती है ऐसे स्थिति में कलाकार परिस्थिति से लड़ने में समय गुजारेगा या फिर सृजन या कलाकृति निर्माण में। इसी बहाने कहीं न कहीं कला के साथ हम आम जनमानस भी कुछ अच्छा न करके, दोषी होते हैं जबकि इसके विपरित में परिस्थितियां कुछ और होंगी। लोग अपने घरों को सजाने में लाखों खर्च कर देते हैं, शौक पूरा करने में एड़ी-चोटी का जोर लगा देते हैं पर किसी दीर्घा में जाकर कोई खूबसूरत सी कलाकृति खरीद कर घर में लगाने से पूर्व हजारों बार सोचते हैं, कलाकार और कलाकृति उनको किसी तीसरी दुनिया से संबंधित नजर आते हैं। लोगों के मन में ये बात घर कर गई होती है कि कलाकृतियां लाखों में बिकती हैं कौन खरीद पायेगा, मेरे बस की बात तो नहीं है। ऐसे भ्रम का असर ये होता है कि लोग कलाकृतियों के नजदीक ही नहीं जाना चाहते जबकि सच्चाई ये है कि सभी कलाकृतियां लाखों में नहीं होती। अधिकतर कलाकृतियां हमारे बजट में भी होती हैं। हमें मौका ढूंढकर कृतियों और कलाकारों के समीप जाना होगा समझना होगा उनके दुनिया को और बढ़ावा देना होगा उनको। कलाकारों को उत्साहित करना होगा कि वो हमेशा कुछ न कुछ नया सृजन करें। बात अगर दीर्घाओं और कलाकारों की करें तो कमी वहां से भी है। आज जबकि विज्ञापन ही सबकुछ है, बड़े-बड़े होर्डिंग्स और स्क्रिप्टेड वीडियोज देखकर घर के सामान खरीदने की बात होती है ऐसे समय में कला दीर्घा अपने प्रदर्शनी को लेकर बहुत ज्यादा प्रचार-प्रसार नहीं करती। कलाकृतियां और कलाकारों के होर्डिंग्स और बैनर तैयार नहीं करवाती कुल मिलाकर कहें तो ऐसे माहौल क्रियेट नहीं कर पाती कि लोग हमसे जुड़ने हेतु उत्साहित हो सकें, उनके अंदर कलाकृतियों को समझने की प्यास उठ सके। कला दीर्घाओं को कलाकारों एवं उनके कृतियों के चयन के संबंध में भी बहुत ही काम की जरूरत है। आम-खास से इतर सभी के साथ अच्छे बर्ताव की उम्मीद भी उनसे दर्शकों को है। कलाकृतियों को दीर्घाओं से निकाल कर गांव, देहात, बाग-बगीचों और आये दिन हो रहे पार्टियों तक लाना होगा?। बदलाव हेतु कलाकारों को भी प्रयास करना होगा, गुटबाजी जैसे मुद्दों से ऊपर उठकर कृतियों के समान ही अपने को भी विशेष विचार वाला बनाना होगा। मैं ही सबकुछ के आवरण से बाहर निकलना होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में बदलाव होकर रहेगा। संलग्न कलाकृतियां शालिनी कश्यप, वाराणसी की हैं।

दृष्टिकोण

लाल बहादुर श्रीवास्तव

नया साल अब तो छोड़ो लेना रिश्वत यार

देश भर के प्रदेशों की खबरों में कभी तहसीलदार कभी नायब तहसीलदार पटवारी ,इंजीनियर कई विभागों संस्थाओं ,सोसायटी के प्रमुख अधिकारी नगर पालिका नगर निगम से जुड़े अधिकारी कर्मचारी शिक्षा विभाग ,स्वास्थ्य विभाग बैंक अधिकारी, अन्य शासकीय विभागों एंव संस्थाओं के अधिकारी कर्मचारी रंगे हाथो रिश्वत लेते धल्लड़े से पकड़े जा रहे हैं । शर्मशार करने वाली बात तो यह है कि रोजाना ऐसी खबरों के बाद भी लोक सेवक बाज नहीं आ रहे हैं। लोक आचरण संहिता से बंधे सभी लोक सेवकों का यह कृत्य क्षम्य योग नहीं है। अब सवाल ये उठता है दिन ब दिन लोक सेवक अपनी ईमानदारी कर्मठता से क्यों दूर होते जा रहे हैं?

सुबह का कौन सा भी अखबार उठाकर देख लें ।अखबार के किसी न किसी पृष्ठ पर ख़बरें पढ़ने को मिल जाएगी।साल के पहले दिन ही समाचार में पढ़ने को मिला मऊगंज के रिटायर्ड हेडमास्टर से उनकी सेवानिवृति पर एरियर्स और अरजित अवकाश की राशि 12लाख 70हजार की 50प्रतिशत राशि बाबू द्वारा मांग करने पर 5लाख 90हजार दफ्तर में पाये जाने पर लोकायुक्त ने रंगे हाथों उसे पकड़ा ।जबकि फरियादी पूर्व में 30हजार रूपये पहले ही दे चुका था। देश भर के प्रदेशों की खबरों में कभी तहसीलदार कभी नायब तहसीलदार पटवारी ,इंजीनियर कई विभागों संस्थाओं ,सोसायटी के प्रमुख अधिकारी नगर पालिका नगर निगम से जुड़े अधिकारी कर्मचारी शिक्षा विभाग ,स्वास्थ्य विभाग बैंक अधिकारी, अन्य शासकीय विभागों एंव संस्थाओं के अधिकारी कर्मचारी रंगे हाथो रिश्वत लेते धल्लड़े से पकड़े जा रहे हैं ।

शर्मशार करने वाली बात तो यह है कि रोजाना ऐसी खबरों के बाद भी लोक सेवक बाज नहीं आ रहे हैं। लोक आचरण संहिता से बंधे सभी लोक सेवकों का यह कृत्य क्षम्य योग नहीं है। अब सवाल ये उठता है दिन ब दिन लोक सेवक अपनी ईमानदारी कर्मठता से क्यों दूर होते जा रहे हैं?

आखिर क्या कारण है ।पच्चीस तीस वर्षों पूर्व दो या तीन केस रिश्वत खोरी के पढ़ने सुनने को मिलते थे आज सीना ठोके इतने पढ़ने लिखने को मिल रहे हैं मानो प्रतिस्पधा की हौड़ मची हुई हो।हमारा सेवा भाव ,लोक आचरण हमें कहां लेकर जा रहा है ।सेवा के पूर्व निष्ठा से और ईमानदारी से सेवा कार्य संकल्प भरे जाने वाले संकल्प पत्रों पर हम कालिख पोतने पर क्यों आमादा हो रहे है हमारी बढ़ती भोग विलासिता कहीं न कहीं इसका एक कारण भी है।

सेवा में लगे प्रत्येक लोक सेवक को काम के बदले पारिश्रमिक वेतन मिलता है जिसमें वो अपना गुजारा आसानी से कर सकता है ।लेकिन अधिकांश अपने पदों का दुरूपयोग करते हुए येन केन बेतहाशा दौलत कमाने में जुट रहे हैं ।पद दायित्व के साथ आपकी जिम्मेदारीयां जब तय की है तो उसी अनुरूप आपको काम भी करना होता है लेकिन आज अधिकांश अधिकारी कर्मचारी अपने अधिकारों का उपयोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए

गलत तरीके से बेतहाशा सम्पति कमाने में लगे है।शिक्षा विभाग जैसे पवित्र मंदिर में भी इसका बोलबाला है ।अभी नयी नयी नौकरी में लगे पास के एक शहर के शिक्षक ने बताया ज्वाइनिग के बाद एम्पलाई आई डी बनाने के लिए बाबू ने 5000मांगे थे विवशता में उनके साथ कई शिक्षकों को नोट देना पड़े । कई विभागों के आदतन विभागीय बाबूजी बिन लिए दिए काम ही नहीं करते ।लिखते लिखते एक और त्वरित प्रकरण आज पढ़ने में आया सीधी में आदिवासी विकास विभाग के सहायक आयुक्त को अपने ही चपरासी के स्थानान्तरण को कैंसल करने के लिए 20000रूपये की मांग की गई थी जिसमें चपरासी 15000रूपये पहले ही दे चुका था।शेष

5000की मांग करने पर चपरासी ने इन साहब को शेष राशि देते हुए रंगे हाथों लोकायुक्त से पकड़ा दिया।अब अपने ही कार्यालय के चपरासी जैसे छोटे पद वाले व्यक्ति से ही बड़े साहब रिश्वत ले रहे हैं इस बात से समझा जा सकता है उच्च पदों पर बैठे सेवारत अधिकारियों का नैतिक पतन कितना गिरता जा रहा है। छुट्टियां स्वीकृत के लिए ,अपनी जमा राशि निकालने के लिए या अन्य कारणो के लिए दक्षिणा मांगते हैं जब तक न दें काम ही नहीं करते हैं- सिस्टम के चलते ऊपर भी देना पड़ते है जुमला बड़ी शानो शोकत से कहते हैं। बेचारे? डरे रहते हैं कौन पंगा लें ,रोजाना ही काम पड़ेगा ,सोचते है दे ही दो।

अधिकांश लोकायुकत में ऐसे अधिकारी कर्मचारी भी पकड़े जा रहे हैं जो पहले मांग की एक किस्त डकार चुके होते हैं फिर भी पेट नहीं भरता मांग जारी रहती है इतना तो देना ही पड़ेगा ।जब सामने वाला याचक याचना करते करते परेशान हो जाता है तब वह रंगे हाथों पकड़वाने की मानसिक स्थिति में पहुंच जाता है।ऐसे लोकसेवकों को नौकरी से बर्खास्त करना ही उचित सजा देना होगा।

काम को टालना ,समय पर न करना ,बहाने बनाना ,टल्ले देना ।नियमों की अवेहलना करना कई कारण ऐसे हैं जो लोक सेवकों को आगे जाकर लोलुप्तावश लोकायुक्त की गिरफ्त में लाते ही है।अपवाद स्वरूप कुछ लोकसेवक दुर्भावना स्वरुप कभी कभी षड्यंत्र पूर्वक जाने अनजाने में भेंट चढ़ा दिए जाते हैं।सौजन्य से लिया दिया जाने वाला बिना परेशानी के लेनदेन आज शिष्टाचार की श्रेणी में आता है।

हम सबके समक्ष प्रश्न ये खड़ा होता है आपको जब अपनी सेवा के बदले वेतन मिल रहा है तो आप किन नियमों के चलते रिश्वतखोरी कर रहे हैं जनाब? जनता को आप कब तक मूरख बनाएंगे ।परिणाम हम देख ही रहे हैं रोजाना कई लोकायुक्त की चपेट में आकर अपना ही नहीं अपने परिवार का सर्वनाश कर रहे हैं अपने हाथों अपने घर का शीशा तोड़ रहे हैं।जब आपकी नौकरी ही नहीं रहेगी तो आप कहां से अपने परिवार का पालन पोषण करोगे।उस ईश्वर का आभार व्यक्त करो जिसने आपको लोक सेवा का मानव सेवा का काम सौंपा है उसे ईमानदारी से करो ।अपने पूर्वजों को नमन करते? हुए उनके संस्कारों ईमानदारी को आत्मसात करो ।लोक आचरण नियमों से अपनी नौकरी मुस्तैदी से करों।ऐसा कमाया धन भी किस काम का आपके जीवन को विनाश की और ले जाएं ।आप कितनी ही काली संम्पति कमा लें ।आपको एक न एक दिन रिश्वतखोरी के लिए हवालात की सैर करनी होगी ।अच्छा होगा नई सोच के साथ प्रत्येक लोक सेवक सुबह की सैर करें ।मनन करें चिंतन करें । नये साल

में संकल्प लें ,रिश्वत की भावना कभी मन में घर न करें।बस यहीं सोचे जब बांस न रहेगा (नौकरी ही नहीं रहेगी)तो बांसुरी जिंदगी में कैसे बजेगी।भारत के लोक सेवकों दस्तक दे गया है नया साल ,लोक सेवकों से प्रार्थनाएं, कुछ अच्छा सोचो ,सच्चे मन से भरे संकल्प पत्र के प्रति जवाबदार बनो , मनन करो ,रिश्वत लेना अब तो छोड़ो यार।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

जेल के भीतर की तथा-कथा बयान करते - 'ब्लैक वारण्ट'

दिल्ली के तिहाड़ जेल में नौकरी करते समय सुनील कुमार गुप्ता ने पत्रकार सुनेत्रा चौधरी के साथ मिलकर छह साल पहले एक किताब लिखी थी - ब्लैक वारण्ट ञ्कन्फेशन्स ऑफ ए तिहाड़ जेलर कन्फेशन माने दोष स्वीकृति यानी अपराध स्वीकरण और ब्लैक वारंट माने फाँसी के लिए निकला थर्ड वारण्ट। किताब में बहुत कुछ ऐसा है जिसको पढ़ने के बाद अचरज इस बात का रहा है कि क्या वाकई इस किताब का पूरा सच नेटफ्लिक्स अपनी इस सिरीज में दिखा पाएगा ? क्या वह दिखाएगा कि अफजल गुरू की फाँसी के दौरान क्या कुछ हुआ? या सीबीआई प्रमुख रहे आलोक वर्मा ने क्या 'गुल' खिलाए और क्या सहारा प्रमुख की तिहाड़ में लगने वाली महफिलों का सच किताब के अनुसार नेटफ्लिक्स दिखा पाएगा?

अब सब कुछ बदलते समय की सहूलियतों के अनुसार होता है। दोष सिद्ध ट्रम्प अमेरिका के राष्ट्रपति बनने जा रहे हैं। कांग्रेस की सरकार के समय के ज्ञानी जैल सिंह गृहमंत्री होते हुए तिहाड़ जेल के भीतर खास मकसद से आते हैं। 'इंडिया इज इंदिरा और इंदिरा इज इंडिया' का नारा भी है और है एक कोशिश ये बताने की भी की गईहै कि कांग्रेस शासनकाल में एशिया की इस सबसे बड़ी जेल में क्या कुछ चलता रहा ? अब सब बन्द हो चुका है, इसकी कोई गारण्टी यह सिरीज़ नहीं लेती लेकिन जो कुछ - चुन चुनकर दिखाती है, उससे दिलचस्पी आखिर तक बनी रहती है।

अगर आपको जेल के भीतर के जीवन को जानने की उत्सुकता है और क्राइम स्टोरीज देखना पसन्द करते हैं तो आपको ये सिरीज़ पसन्द आयेगी । इसकी कहानी वर्ष 1980 के दशक के समय की है जिसमें तिहाड़ जेल में क्या-क्या घटा उसके बारे में दिखाया गया है। सिरीज में रंगा और बिल्ला, मक्बूल जैसे कैदियों की भी कहानी दिखाई गई है जिन्हें तिहाड़ जेल में फौसी लगाई गई थी. उस फाँसी की प्रक्रिया के बारे में भी इसमें दिखाया गया है जो आपके रोंगटे खड़े कर देगा। सीरीज का हर एक एपिसोड तिहाड़ के अनदेखे राज खोलते हैं जिसे देखने में आपको मजा आएगा. सीरीज की लंबाई भी कहानी के हिसाब से ठीक है जिसके कारण आप बोर नहीं होंगे. शुरू से लेकर अंत तक, ये सीरीज आपको बांधे रखने का वादा करती है. इसमें कई मजेदार जेल से जुड़े किस्से भी हैं जो आपको सोचने पर मजबूर कर देगी कि पहले हमारी जेलों में ऐसा सब भी हुआ करता था ।

इस सिरीज के बारे में एक बात बहुत ध्यान देने वाली है और वो है इसकी कास्टिंग । कास्टिंग डायरेक्टर मुकेश छाबड़ा एक बार फिर अपना काम परफेक्ट तरीके से करते दिखाई दिये ।उन्होंने जिस भी अभिनेता को जिस भूमिका के लिये चुना है, उन सभी ने अपना रोल को

बखूबी निभाया है। लेजेंडरी एक्टर शशि कपूर के पोते और सुपरस्टार रणबीर कपूर के कजिन जहान कपूर ने इस पूरी सिरीज में जबरदस्त एक्टिंग की है । वो कहीं भी आपको ऐसा महसूस होने नहीं देते कि वो फीके पड़ रहे हैं या ओवरएक्टिंग कर रहे हैं । एक्टर राहुल भट्ट से जिस चीज की माँग डायरेक्टर ने की थी, उन्होंने वो माँग पूरी की ।उन्होंने अपने किरदार को लाइमलाइट से भटकने नहीं दिया और अपनी स्क्रीन प्रेजेंस को शानदार बनाए रखा ।जहान के साथ बाकी सपोर्टिंग एक्टर्स परमवीर सिंह चीमा और अनुराग ठाकुर का काम भी दमदार रहा ।उन्होंने सिरीज के जरिए अपनी एक्टिंग रेंज दिखाई और तारीफ के हकदार बने । बिकिनी किलर चार्ल्स शोभराज के किरदार में एक्टर सिद्धांत गुप्ता भी चार्मिंग लगे । उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था कि मानो चार्ल्स शोभराज अपने टाइम में ऐसे ही बात करते होंगे । उन्होंने अपने किरदार को मानो घोटकर पी लिया था. थोड़ा ही सही, लेकिन सिद्धांत की स्क्रीन प्रेजेंस भी दमदार थी ।

डायरेक्टर विक्रमादित्य मोटवानी और सत्यांशु सिंह ने एक ऐसी कहानी दिखाने का वादा किया है, जिसे देखकर शायद हर कोई अन्दर से हिल जाएगा । इसमें दिखाए गए कई दृष्य् वास्तविक घटनाओं से प्रेरित हैं । सिरीज़ में कई दृष्य हैं जो आपको जेल की अन्दर की सच्चाई से रूबरू कराएंगे और आपके दिल में वहाँ की जिन्दगी एक खौफ पैदा करेंगे । इसमें काफी खून खराबा और मारकाट को भी दिखाया गया है जो दर्शाता है कि फिल्ममेकर ने कोई कसर नहीं छोड़ी है हमें जेल की असल जिंदगी दिखाने में । इसकी राइटिंग भी शानदार है, सभी सीन्स को काफी अच्छे से लिखा गया जिससे ये एंगेजिंग लगती है. इसमें दिखाया गया सस्पेंस भी कई बार काम कर जाता है । सिरीज आपको जेल में काम कर रहे जेलर और सिपाहियों की जिंदगी के बारे में भी दिखाती है कि कैसे वो इतनी खतरनाक जगह पर अपनी जान की परवाह किए बगैर काम करते रहते हैं ।

ए.बी.वी.पी. की रैली में छात्रों को शामिल करने का व्यापक विरोध

नर्मदापुरम। सोशल मीडिया पर आज एक पोस्ट नगर में निकली अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की रैली से संदर्भित जागरूक पालकों को झकझोरती है। जिसमें लिखा है कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की रैली का समर्थन करते हुए भी उसकी इस रैली का विरोध करने के लिए लिखना पढ़ रहा है, कारण रैली में शामिल स्कूली छात्र-छात्राओं का शामिल होना..! भाजपा से संबंधित यामा फौजदार ने अपनी वाल पर यह पोस्ट लगाकर सभी को झकझोर दिया उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की निकली रैली को लेकर आगे लिखा, आश्चर्य का विषय है कि हम आखिर किस ओर बढ़ रहे हैं इसे सोचना समझना चाहिए, राजनीति के ककहरे के लिए महाविद्यालय है स्कूली छात्र-छात्राएं नहीं..? स्कूली जीवन राजनीति के दल-दल में उतरने और उतारते के लिए नहीं.. जो आज पुलिस जैसी निष्ठावान सेवकों के संरक्षण में दिखाई दी.. इसे कदापि ठीक नहीं समझा जा सकता विषेश कर छात्राओं का इस रैली में शामिल किया जाना वह भी उनके हाथों में बैनर देकर..? यह चिंता का विषय होना चाहिए। हम आधुनिक हैं लेकिन इतने भी नहीं कि राजनीति के लिए अब हमें अपनी बहन बेटियों को भी इस राजनैतिक दलदल में स्कूली शिक्षा ग्रहण करने के दौर में राजनीतिक अनुवांशिक संगठनों का दामन पकड़ाना पड़े.? पार्टी के जिम्मेदार अविभावक की इस पीढ़ा के समर्थन में सोशल मीडिया सहित लोगों में व्यापक प्रतिक्रिया हो रही है। उधर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा कहा जा रहा है कि उन्होंने नर्मदा को साफ स्वच्छ बनाने के लिए स्वच्छता के लिए रैली निकाली है। इसमें विद्यार्थी परिषद ने धर्माचार्य सोमेश परसाई का भी उपयोग किया है। पालक इस मसले में अपनी प्रतिक्रिया जो दे रहे वह वास्तव में विचारणीय है। उनका कहना है नर्मदा को साफ स्वच्छ बनाने की योजना पर सरकारी अनेक योजनाएं चल रही है उसमें स्कूली बच्चों का उपयोग ठीक नहीं, बेहतर होता.. परिषद को स्कूली बच्चों का पहली बात उपयोग नहीं करना था और उपयोग करना ही था तो स्कूल प्रबंधन के विरुद्ध उनके पालकों की जेब में डाले जाने वाले फीस के मामले में स्कूल प्रबंधन के विरुद्ध प्रदर्शन करना था।

सांसद माया नारोलिया ने अवैध कब्जा हटाने की शिकायत की

नर्मदापुरम। तत्कालीन नपाध्यक्ष, महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती माया नारोलिया द्वारा किए गए गृह निर्माण मंडल बाढ़ पीड़ित कालोनी में भूखंडों से अवैध कब्जा हटाने की शिकायत पर प्रशासन सकते में आ गया.. आम आदमी पार्टी आरटीआई विंग जिलाध्यक्ष सीताशरण पाण्डेय ने कलेक्टर से इस मामले को लेकर जनसुनवाई में दस्तावेजी शिकायत की है इसे लेकर कलेक्टर सहित पूरा प्रशासनिक अमला इसलिए भी सकते में आ गया क्योंकि श्रीमती माया नारोलिया वर्तमान में राज्य सभा सांसद हैं। कलेक्टर को जनसुनवाई मे की गई शिकायत में वर्ष 2009 से 2014 तक नपाध्यक्ष रही श्रीमती नारोलिया का पद दुरुपयोग गृह निर्माण मंडल एवं बाढ़ पीड़ित कालोनी में नियम विरूद्ध अवैध कब्जा कर आलीशान मकान बनाया है दस्तावेजी सबूत के साथ बताया है। सरकारी दस्तावेजों में जिसे आज भी उस भूखण्ड को बी.स्वर्ण कुमारी पत्नी स्व. कृष्णमूर्ति के नाम आवंटित / दर्ज होकर अहस्तांतरणीय बताया है। स्टाम्प पेपर पर शपथपत्र के जरिए क्रय किए भूखण्डों को शिकायत में नियम विरुद्ध और असंवैधानिक कहा है। राज्यसभा निर्वाचन में इन भूखण्डों की जानकारी देते हुए श्रीमती नारोलिया ने इनकी कीमत 1,85,50000 बताई है। गौरतलब होगा होशंगाबाद विधानसभा क्षेत्र में जमीन की अवैध खरीद-फरोख्त, सरकारी जमीन पर अतिक्रमण के मसले सामने आने से प्रशासन में हड़कंप मचा हुआ हैं। इटारसी न्यास भूमि अवैध रूप से बेचने को लेकर जिसमें अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश माननीय श्री भदोरिया जी ने हालिया शंकर रसाल के प्लॉट के मामले में संजीव श्रीवास्तव और राजा सेफी को दोषी बताया पुलिस ने न्यायालय के आदेश पर जिन्हें अभिरक्षा में लेकर जेल भेजा है इसके अलावा पूर्व मुख्य नगरपालिका अधिकारी अक्षत बुंदेला और उपपंजीयक आनंद पाण्डेय. के खिलाफ भी गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं। सरकारी जमीन पर कब्जा, भूमि में लिप्त आपराधिक रसूखदारों में न्याय की गरिमा का इससे बढ़िया संदेश गया है। न्यायालयीन आदेश के बाद अब महसूस किया जा रहा है अकारण तीस वर्षों से लंबित उन फ़ाइलों को निपटाने में कलेक्टर सुस्ती नहीं लगायेंगे जिसमें विधायक के ही बड़े भाई ने नजूल के बड़े रकबे पर दूकान निर्मित कर बेचीं और किराए पर दी है इतना ही नहीं कूट रचित दस्तावेज (रजिस्ट्री) प्रस्तुत कर जिसमें नजूल विभाग से नगरपालिका की भूमि पर नामांतरण चाहा बल्कि पट्टे का आवेदन के साथ भूमि नामांतरण का आवेदन नजूल में कर रखा है।

अपार आईडी में पालकों की लिखित अनुमति का विरोध

जिला अभिभावक संघ और जनता सरकार मोर्चा ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल। स्कूलों में इन दिनों बच्चों की अपार आईडी बनाई जा रही है। इस आईडी में अभिभावकों की लिखित सहमति अनिवार्य है। इसे लेकर जिला अभिभावक संघ और जनता सरकार मोर्चा ने ज्ञापन सौंपकर लिखित सहमति अनिवार्य नहीं है, यह संदेश सभी को बताए जाने के लिए ज्ञापन सौंपा है। मोर्चा के गिरीश खंडेलवाल ने बताया कि शासन द्वारा कक्षा पहली से बारहवीं तक के विद्यार्थियों को स्कूल द्वारा अपार आईडी बनाए जाने की बात कही जा रही है। जिसके तहत विद्यार्थियों को एक फार्म देकर अभिभावकों के हस्ताक्षर करवाकर, अपार आईडी बनवाना अनिवार्य बताया जा रहा है। इस फार्म को स्कूल द्वारा एक सादे कागज पर प्रिंट करवाकर दिया जा रहा है एवं इस कागज पर किसी भी संस्था की कोई सील तथा नाम अंकित नहीं है। मोर्चा के अभिषेक चौकसे ने बताया कि यदि अभिभावक सहमत ना हो तो स्कूल प्रबंधन का कहना रहता है कि उन्हें तो सिर्फ ऊपर से निर्देश मिले हैं। जानकारी मांगे जाने पर लिखित आदेश ना होना बताते है। राष्ट्रीय पत्रकार कल्याण संगठन के पत्रकार संजय द्विवेदी ने बताया कि जिले के सभी शासकीय, अशासकीय विद्यालयों को प्रशासन द्वारा निर्देश जारी किए जाए कि विद्यार्थियों के पालको से चर्चा कर सहमति अथवा असहमति प्राप्त करें और जो पालक सहमति ना दें तो उन पर अनावश्यक दबाव ना डाला जाए। मोर्चा के उत्पल शुक्ला ने बताया कि सभी विद्यार्थियों को तथा उनके अभिभावको को विद्यालय आश्वस्त करें कि उनका अपार आईडी में दिया जाने वाला व्यक्तिगत डेटा भविष्य में लीक नहीं होगा, और यदि होता है तो उसकी जिम्मेदारी विद्यालय प्रबंधन एवं प्रशासन की होगी। इस बात की लिखित सहमति या रसीद में उल्लेख भी होना चाहिए। मोर्चा के नितिन चौकसे ने बताया कि विद्यालय प्रबंधन एवं प्रशासन अभिभावकों को अवगत कराए कि जिन विद्यार्थियों के अपार आईडी बनाए जा चुके हैं, तो स्वेच्छा से कभी भी उनके अपार आईडी को अभिभावक निरस्त करवा सकते हैं।

शिक्षा मंत्रालय की वेबसाइट एवं मोर्चा द्वारा शासन से आरटीआई में मांगी गई जानकारी के जवाब में कहा गया है कि कहीं भी ऐसे किसी प्रावधान का उल्लेख नहीं है, कि अपार आईडी ना बने होने पर कोई विद्यार्थी परीक्षा से वंचित किया जा सकता है और ना उसकी पढ़ाई प्रभावित हो सकती है। ज्ञापन में मांग की गई है कि स्कूल प्रबंधन को निदेर्शित किया जाए कि विद्यार्थियों के दिए जाने वाले फार्म पर स्कूल का नाम और पता का उल्लेख हो तथा अभिभावक की सहमति/असहमति वाले फार्म की रसीद भी उन्हें दी जाए।

धन्य है धरा जहां मालवा के भगवान आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सूरीश्वर जी महाराज जैसे संत जन्मते है

(आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सूरीश्वर जी महाराज के नवम स्वर्गारोहण दिवस पर विशेष)

धार, राजेश शर्मा। धन्य है धरा,धन्य है माटी जहां आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सूरीश्वर जी महाराज जैसे संत जन्मते है। तप - त्याग और तपस्या की मूरत आचार्य नवरत्न सागर जी सचमुच रत्न थे। मालवा की माटी के सपूत गुरूदेव की एक झलक और दर्शन से मानों भक्त निहाल हो जाते थे। क्या जैन - क्या अजैन सब की आस्था के केंद्र थे नवरत्न सागर जी.. अपने नाम और जीवन को सार्थक कर गए गुरूदेव... तभी तो गुरूदेव के लाखों- लाख भक्तों के कंठ से यही आवाज गुंजायमान होती है ' सदियों में जन्मते है ऐसे महान संत ' भक्तों की श्रध्दा और आस्था ऐसी कि गुरूदेव दिव्य स्वरूप में हमारे साथ है। तभी तो मालवा भूषण और मालवा के भगवान आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सूरीश्वर जी महाराज के एक दर्शन पा कर भक्त निहाल हो जाते है।

जन जन की आस्था एवं श्रद्धा के केंद्र,मालवा के भगवान, राजगढ़ नंदन ,महातपस्वी , आयम्बिल के अजोड़ आराधक, चरित्र चूड़ामणि वर्धमान तपोनिधि,जीरावाला , भोपावर महातीर्थ उद्धारक, मालव भूषण, अपूर्व वैयावच्चकारी, विराट विरल व्यक्तित्व के स्वामी प्रातः स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी परम पूज्य आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सुरिश्वर जी महाराज का मालवा की माटी पर बहुत उपकार है धर्म भावना, धर्म बीज ,त्याग ,तपस्या ,श्रद्धा, विश्वास तथा सभी की रग- रग में धर्म संस्कारों का रोपण एवं सिंचन तथा धर्म कार्य से जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य गुरुदेव ने किया है।

आपका जन्म जन्म विक्रम संवत 1999 चैत्रवदी तीज मार्च 1942 को राजगढ़ नगरी की पुण्य धरा पर हुआ। आपके बचपन का नाम रतन कुमार था तथा दीक्षा 12 वर्ष की अवधि में हुई ।आपके पिताजी का नाम श्रेष्ठीवर्य श्री लालचंद जी जैन पोसित्रा तथा माता श्रीमती माणिक बाई जैन पोसित्रा (सांसारिक नाम)श्री मणिप्रभा श्री जी महाराज साहेब है ।

आपकी दीक्षा विक्रम संवत 2011मगसर सुदी छठ सन् 1954 को आपके गुरु आचार्य भगवंत श्री श्री चंद्र सागर जी महाराज के करकमलों से संपन्न हुई ।

आपको गणि पद विक्रम संवत 2036 को कार्तिक सुदी पंचमी के दिन अहमदाबाद में प्राप्त हुआ। प्रन्यास पद विक्रम संवत 2039 को वैशाख सुदी तीज के दिन शंखेश्वर महातीर्थ में प्राप्त हुआ। मालव भूषण पद विक्रम संवत 2045 में बैसाख सुदी पूर्णिमा को उज्जैन में प्राप्त हुआ।

उपाध्याय पद विक्रम संवत 2047 में वैशाख सुदी दशमी के दिन पुणे में प्राप्त हुआ , आचार्य पद विक्रम संवत 2050 में मगसर सुदी छठ 30 नवंबर 1992 को भायखला मुंबई में राजगढ़ श्री संघ, मालवा के बहुत से श्री संघ,गुजरात, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र , राजस्थान , बिहार, कलकत्ता आदिके श्री संघ तथा आचार्य श्री के पोसित्रा परिवार जनों की उपस्थिति में प्राप्त हुआ ।

आपका विहार लगभग 2 लाख 61000 किलोमीटर रहा आपका धर्म कार्य स्थल सम्पूर्ण मालवा क्षेत्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, सौराष्ट्र, राजस्थान, महाराष्ट्र, बिहार, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल, चैन्नई आदि रहे है। सात व्यसनों का त्याग,बलि प्रथा की समाप्ति, समाज में फैली हुई कुरीतियों एवं अंधविश्वास को दूर करने का सामाजिक कार्य भी आपने पूर्ण सफलता से किये। आपने सूरिमंत्र की आराधना भी सम्पूर्ण जगत के कल्याण के लिए की।

भक्तों की आधि व्याधि, दुःख, कष्ट आदि को दूर करने के लिए महामांगलिक श्रवण करवाना शुरू किया, उनके इस परोपकारी कार्य को उनके शिष्य आचार्य भगवंत श्री विश्व रत्न सागर सूरिश्वर जी महाराज तथा आचार्य भगवंत श्री मृदु रत्न सागर सूरिश्वर जी महाराज , प्रशिष्य गणिवर्य श्री आदर्श रत्न सागरजी महाराज पूर्ण कर जगत का कल्याण कर रहे हैं ।

आपने लगभग 251 तेले अनेक बेले वर्षितप,अट्ठाईस, 11 उपवास तथा 194 वी ओली की आराधना करते हुए महावदी पंचमी,जनवरी 2016 में चैन्नई के पास वैल्लूर में नवकार मंत्र का जाप करते हुए अपनी नश्वर देह को त्याग कर दिव्य ज्योति में लीन हो गए।

मैं परम् पिता परमेश्वर तथा आचार्य भगवंत से प्रार्थना करता हूं कि आचार्य भगवंत दिव्य लोक से आशीर्वाद रूपी अमृत हम पर सदा बरसाते रहे तथा विश्व का कल्याण करते रहे ।

- प्रफुल्ल फूलचंद जैन पोसित्रा

- आचार्य भगवंत के सांसारिक भतीजे एवं श्री शांतिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर पेढ़ी ट्रस्ट भोपावर महातीर्थ ट्रस्टी राजगढ़ (धार) मध्यप्रदेश ।

जिले में स्वामित्व योजना से अभी तक 81000 हितग्राही हुए लाभान्वित

गरीब, महिला, किसान और युवाओं के व्यवस्थित कल्याण हेतु चार मिशन होंगे संचालित: प्रभारी मंत्री पटेल

बैतूल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए स्वामित्व योजना के तहत देशभर के 50 हजार से अधिक गांवों में 65 लाख प्रॉपर्टी कार्ड का वितरण किया गया और योजना के लाभार्थियों से संवाद भी किया गया। स्वामित्व योजना के तहत हितलाभ वितरण का जिला स्तरीय कार्यक्रम जे एच कॉलेज ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय राज्य मंत्री जनजातीय कार्य दुर्गादास उईके, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल , विधायक हेमंत खंडेलवाल, विधायक चंद्रशेखर देशमुख, विधायक डॉ योगेश पंडाग्रे, विधायक गंगा बाई उईके, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, सुधाकर पवार सहित अन्य जनप्रतिनिधि तथा कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया, सीईओ जिला पंचायत श्री अक्षत जैन सहित अन्य अधिकारी, हितग्राही एवं बड़ी संख्या में जनसमूह उपस्थित रहा। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कृष्णा हजारे ने किया। केंद्र स्तर पर आयोजित कार्यक्रम का जिले की प्रत्येक ग्राम पंचायत में सजीव प्रसारण किया गया।

इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री के कुशल नेतृत्व में मुख्यमंत्री द्वारा निर्धारित देश की चार जातियां गरीब, किसान, महिला और युवा के कल्याण के लिए चार मिशन चलाएं जा रहे हैं। 12 जनवरी युवा दिवस को युवा शक्ति मिशन का प्रारंभ किया गया है। इसी प्रकार गरीब कल्याण, नारी सशक्तिकरण और किसानों के कल्याण के लिए भी मिशन संचालित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा जो कभी किसी ने विचार भी नहीं किया था उसे आज साकार करके दिखाया। ग्रामीणों को उनके निवास भूमि पर मालिकाना हक मिलने से न केवल हितग्राहियों के जीवन स्तर में सुधार आएगा बल्कि ग्राम पंचायतें भी विकास का केंद्र बनेंगी।

स्वामित्व योजना के तहत प्रॉपर्टी कार्ड वितरित- कार्यक्रम में सांकेतिक रूप से बैतूल के ग्राम पांगरा निवासी सरिता गुजरे, गब्रू सलामे, मंगल गुजरे, ग्राम कोसमी निवासी प्रतीक वाघमारे, ग्राम टेमनी निवासी सुनीता वराठे, आठनेर के ग्राम दनोरा निवासी नामदेव धोटे , प्रभात पट्टन के ग्राम सेंदुरजना निवासी पंजाबराव, शाहपुर के ग्राम चिरमाटखेड़ी निवासी शंकर मर्सकोले, भीमपुर के ग्राम दनोरा निवासी द्वारका प्रसाद, चिचोली के ग्राम नसीराबाद निवासी राजकुमार लोखंडे को अतिथियों द्वारा योजना के तहत प्रॉपर्टी कार्ड का वितरण किया गया। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम स्थल पर तहसीलवार स्टॉल लगाए गए जहां राजस्व अमले द्वारा हितग्राहियों को प्रॉपर्टी कार्ड का वितरण किया गया।

विभिन्न योजनाओं के जरिए व्यवस्थित ढंग से विकास- केन्द्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उईके ने कार्यक्रम को संबोधित करते कहा कि प्रधानमंत्री के कुशल नेतृत्व में देश विविध क्षेत्रों में तेजी से प्रगति कर रहा हैं। गरीब, किसान, महिला और युवा वर्ग का विभिन्न योजनाओं के जरिए व्यवस्थित ढंग से विकास किया जा रहा हैं। स्वामित्व योजना ग्रामीण भारत को संपत्ति के स्वामित्व के माध्यम से सशक्त बनाने में अत्यंत महत्ती योजना है। उन्होंने बताया कि स्वामित्व योजना ग्रामीण आबादी वाले क्षेत्रों में संपत्ति के स्पष्ट स्वामित्व की स्थापना की दिशा में एक सुधारात्मक कदम है। इस योजना के तहत ड्रोन तकनीक का उपयोग करके भूमि के टुकड़ों का नक्शा बनाया जाता है और गांव के घरों के मालिकों को स्वामित्व अधिकार के साथ कानूनी संपत्ति कार्ड प्रदान किए जाते हैं। यह योजना राजस्व, ग्रामीण विकास एवं भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा संपादित की जा रही है।

ड्रोन सर्वे के माध्यम से किए गए नक्शे तैयार

योजना के तहत सर्वप्रथम ग्रामीण आबादी भूमि में स्थित संपत्तियों को चूना लाईन डालकर चिन्हित किया गया तथा ड्रोन सर्वे के माध्यम से भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रारंभिक नक्शे उपलब्ध कराये गये। उक्त प्राप्त प्रारंभिक नक्शे का ग्रामीणों की उपस्थिति में मौके पर मिलान किया जाकर उनमें आवश्यक संशोधन कराये गये तथा फाइनल नक्शा तैयार किया गया (ग्राउंड ट्रुथिंग)। प्राप्त फाइनल नक्शा शीट अनुसार भू-खण्डों में भूमि स्वामियों के नाम अंकित कर अधिकार अभिलेख का निर्माण किया गया। (आर.ओ.आर.) पटवारी के सारा एप मोबाइल एप्लीकेशन पर आनलाईन यह कार्य किया गया। इसके पश्चात् तैयार अभिलेख का प्रारंभिक प्रकाशन किया गया। प्रारंभिक प्रकाशन में प्राप्त आपत्तियों का निराकरण कर ग्राम का अंतिम आदेश आरसीएमएस पोर्टल पर कलेक्टर/जिला सर्वेक्षण अधिकारी महोदय द्वारा निराकरण किया गया।

जिले में स्वामित्व योजना का क्रियान्वयन

संयुक्त कलेक्टर मकसूद अहमद ने बताया कि स्वामित्व योजनांतर्गत बैतूल जिले का चयन द्वितीय चरण में किया गया है जिसके अंतर्गत जिले के 1203 आबादी ग्रामों के अधिकार अभिलेख तैयार करने की कार्यवाही 04 दिसंबर 2020 से प्रचलित है। वर्तमान में 1203 ग्रामी में से 996 ग्रामों के अधिकार अभिलेख तैयार किये जा चुके है जिससे लगभग 81000 हितग्राही लाभान्वित हुये है, जिनमें से पूर्व में 534 ग्रामों के लगभग 37500 हितग्राहियों को अधिकार अभिलेख का वितरण किया जा चुका है तथा आज 18 जनवरी को 462 ग्रामों के लगभग 43500 हितग्राहियों को अधिकार अभिलेख का वितरण किया जा रहा है। जिसकी अनुमानित कीमत 87 करोड़ है।

शाहपुर में दिनदहाड़े चली गोलियां

बैतूल/शाहपुर। शांतिप्रिय नगर कहे जाने वाले शाहपुर में शनिवार शाम 4.40 बजे पर रेत खदान के लोगों के मध्य विवाद को लेकर गोलियां चली। जिससे नगर में दहशत का माहौल बन गया है। नगर परिषद अध्यक्ष शाहपुर रोहित विक्की नायक ने इसका घोर विरोध करते हुए बताया कि जिले के शाहपुर थाना क्षेत्र में अज्ञात लोगों ने रेत के मामले को लेकर फायरिंग की है। घटना में एक युवक घायल हो गया है। जिसे उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शाहपुर में भर्ती किया था। उसके पश्चात उसे भोपाल के लिए रेफर कर दिया गया। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक शाहपुर के पतवापुरा में शनिवार शाम को अज्ञात लोगों ने फायर किया। फायरिंग में राजेश विश्वकर्मा नाम का एक युवक घायल हो गया है। युवक के पैर में गोली लगी है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। घायल को तुरंत अस्पताल में भर्ती किया है। प्राथमिक जानकारी यह भी सामने आ रही है कि रेत के मामले को लेकर विवाद में गोली चलने की यह घटना हुई है। आरोपियों ने चार राउंड फायरिंग करने की जानकारी भी लोगों द्वारा बताया गया है। इस संबंध में शाहपुर थाना प्रभारी मुकेश ठाकुर ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि पुलिस घटना स्थल के आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है और पूरे मामले की बारीकी से जांच कर रही है।

वरिष्ठ पत्रकार गोलानी की धर्मपत्नी का निधन

सोमवार को गरुण पुराण, श्रीमद्भगवद्गीता समापन पर 11बजे प्रसाद वितरण

सुबह सवेरे सोहागपुर। वरिष्ठ पत्रकार हीरालाल गोलानी की धर्मपत्नी ,जे डी गोलानी भोपाल, गोवर्धनदास राजू गोलानी भोपाल एवं मनोज गोलानी की भाभी एवं भाजपा नेता विशाल गोलानी एवं पंकज गोलानी की माताश्री श्रीमती पार्वती गोलानी का 62 साल की उम्र में अल्पअवधि में असाध्य केंसर रोग से 7 जनवरी को भोपाल एम्स अस्पताल में निधन हो गया था।उनका अंतिम संस्कार जमनी मुक्तिधाम सोहागपुर में 8जनवरी को किया गया। जिसकी पगड़ी रस्म देनवा गार्डन में 10जनवरी को संम्पन्न हुई थी।उनकी आत्मा शांति के लिए गरूण पुराण, एवं श्रीमद्भगवद्गीता के पाठ का आयोजन किया गया है। जिसका समापन निज निवास खंडेलवाल कालोनी में दिनांक 20 जनवरी सोमवार को 11 बजे होगा। इसके उपरांत प्रसाद वितरण किया जाएगा।

कब होगा साप्ताहिक बाजार का स्थान परिवर्तन

नागपुर रोड पर बाजार की तैयारी प्रारंभ, अटकलों का दौर अब भी जारी

बैतूल/मुलताई। आग्ल स्कूल ग्राउंड में लगने वाले साप्ताहिक बाजार के स्थान परिवर्तन की अटकलें समाप्त होने का नाम नहीं ले रही है। बीते दो वर्ष से स्कूल ग्राउंड से हटाकर साप्ताहिक बाजार को मुलताई नागपुर पुराने लोक निर्माण विभाग के मार्ग पर लगाए जाने के प्रयास हो रहे हैं किंतु राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव एवं चंद अड़ंगे बाजो के चलते अब तक साप्ताहिक बाजार का स्थान परिवर्तन नहीं हो सका है। इधर वर्तमान बाजार स्थल की समस्या निरंतर बढ़ रही है। विशेष तौर से स्कूली बच्चों की समस्या और साप्ताहिक बाजार जाने वाली महिलाओं की दिक्कते भी बड़ते जा रही है। इस बीच नगर पालिका मुलताई एवं ग्राम पंचायत कामथ अनेको बार साप्ताहिक बाजार स्थान परिवर्तन का प्रस्ताव ले चुकी है। स्थान परिवर्तन को लेकर जिला कलेक्टर द्वारा एक वर्ष में दो बार स्थल निरीक्षण कर परिवर्तन स्थल पर साप्ताहिक बाजार लगाने के आदेश दे चुके हैं किंतु इसके बावजूद भी अब तक साप्ताहिक बाजार कामथ क्षेत्र से लगे पुराने पीडब्ल्यूडी मार्ग पर नहीं लगाया जा सका है। हालांकि वर्तमान समय में साप्ताहिक बाजार को पुराने मुलताई नागपुर मार्ग पर लगाई जा सके इसके लिए कामथ ग्राम पंचायत एवं नगर पालिका मुलताई अपनी-आपनी सीमा क्षेत्र मे सुधार एवं बाजार लगाने की स्थिति का निर्माण करने के प्रयास कर रहे हैं जिसमें कामथ ग्राम पंचायत ने बाजी मार ली है मुरमीकरण और समतलीकरण का कार्य लगभग पूर्ण कर दिया है वहीं नगर पालिका समतलीकरण में जुटी है लाइटिंग व्यवस्था की गई है गंदे पानी की निकासी के लिए पाइप डाले जा रहे हैं।

क्यों आवश्यक है साप्ताहिक बाजार का स्थान परिवर्तन- 25 वर्ष पूर्व साप्ताहिक बाजार नगर के प्रमुख मार्ग ताप्ती की प्रथम पुलिया से फव्वारा चौक तक लगा करता था किंतु आय दिन होने वाली दुर्घटनाएं और यातायात प्रभावित होने के कारण तत्कालीन नगर पालिका प्रशासक एवं एसडीएम प्रमोद गुप्ता द्वारा साप्ताहिक बाजार का स्थान परिवर्तन कर आंग्ल स्कूल खेल मैदान की खाली भूमि पर लगाया गया था किंतु तब इससे लगा अधिकांश भाग खाली था वर्तमान समय में इस क्षेत्र के सभी खाली स्थानों पर भवन बन गए हैं । पीएचई एवं बीआरसी विभाग ने फेंसिंग कर दी है और अब बाजार में जाने के लिए मात्र 8 फीट चौड़ा रास्ता है जहां हमेशा ही दुर्घटना होती है। बाहर निकलने का रास्ता न होने कारण अगर यहां भगदड़ होती है तो गंभीर हादसा हो सकता है। दूसरी ओर स्कूली शिक्षक बताते हैं कि उनके पास खेल ग्राउंड के लिए कोई स्थान नहीं है और दूसरा जहां बाजार लगता है उससे लगे कक्षाओं में पढ़ना या पढ़ाया जाना अत्यंत कठिन होता है । साप्ताहिक बाजार में स्कूल के सामने भाग में मिर्ची बाजार लगता है जिससे विद्यार्थियों को सांस लेने में दिक्कत होती है । साप्ताहिक बाजार के दिन सभी दो पहिया वाहन मार्ग पर खड़े रहते हैं जिसके कारण स्टेट बैंक के सामने बाजार के दिन जाम लगता है और आए दिन दुर्घटनाएं होती है।

सर्व सुविधा युक्त बाजार लगाया जाएगा : वर्षा गडेकर

हमने साप्ताहिक बाजार स्थान परिवर्तन को लेकर चल रही अटकलें और स्थान परिवर्तन को लेकर नगर पालिका अध्यक्ष वर्षा गडेकर से चर्चा की वर्षा गड़ेकर ने बताया कि नगर पालिका बाजार स्थान परिवर्तन को लेकर गंभीर है। पुराने नागपुर रोड पर बाजार लगाने के लिए समतलीकरण कार्य तेजी से चल रहा है लाइटिंग व्यवस्था की गई है। गंदे पानी के लिए पाइप डालने का कार्य आज पूर्ण हो जाएगा। हमारा प्रयास है कि इस बार जब बाजार नए स्थान पर लगे तो वहां व्यापारियों और बाजार में आने वाले लोगों के लिए सभी साधन उपलब्ध रहे ।पेयजल शौचालय की व्यवस्था हो ,जल निकासी की व्यवस्था हो, सब्जी, व्यापारी, कपड़ा व्यापारी, मिर्ची, गुड़ सभी व्यापारीयो के लिए स्थान चयनित किया जाएगा और इन्हें नगर पालिका प्लांट का आवंटन करेगी और यह सुनिश्चित करेगी कि जिसका प्लांट जहां है वह अपने स्थान पर ही दुकान लगाए। हमारा प्रयास है कि आगामी सप्ताह तक बाजार के स्थान परिवर्तन की प्रक्रिया पूर्ण हो जाए।

साप्ताहिक बाजार का समतलीकरण कार्य हुआ पूर्ण : पुष्पा डहारे

जहां साप्ताहिक बाजार लगाया जाना है यह स्थान नगर पालिका और ग्राम पंचायत दो सीमाओं में आता है। नगर की सीमा से लगे ग्राम पंचायत कामथ की सरपंच पुष्पा जीतू डहारे बताती है कि ग्राम पंचायत कामथ ने अपनी सीमा मे बाजार लगाए जाने हेतु समतलीकरण कार्य पूर्ण कर दिया है। इसके उपरांत साप्ताहिक बाजार प्रारंभ होने के बाद हमारी योजना पेयजल के लिए पानी की टंकी निर्माण करना, सुलभ शौचालय का निर्माण करना, गंदे पानी की निकासी के लिए अभी हम कच्ची नाली बना रहे हैं बाद में इसे पक्की नाली और गंदे पानी की समस्या के स्थाई हल के लिए शोक फिट बनाए जाएंगे।

रणबीर कपूर की 'धूम 4' को लेकर तगड़ा माहौल बना हुआ है। इस फिल्म को लेकर अलग-अलग अपडेट्स सामने आए हैं। कभी कहा जाता है कि फिल्म में रणबीर कपूर चोर बन रहे हैं। आदित्य चोपड़ा ने विक्की कौशल को फिल्म में आने का ऑफर दिया है। रणबीर कपूर चोर बनेंगे और उन्हें पुलिस वाला बनकर विक्की कौशल पकड़ेंगे। इसका साफ मतलब यह है कि फिल्म से अभिषेक का पत्ता कट गया।

'धूम-4' में एक्शन का तड़का लगाएंगे विक्की

यशराज फिल्म्स की हिट फ्रेंचाइजी फिल्म 'धूम 4' को लेकर तरह-तरह की खबरें सामने आ रही हैं। कुछ समय पहले ही दावा किया गया था कि रणबीर कपूर की इस फिल्म में कियारा आडवाणी की एंट्री हो सकती है। कहा तो ये भी जा रहा था कि बॉलीवुड के जाने-माने डायरेक्टर अयान मुखर्जी फिल्म 'धूम-4' को बनाने वाले हैं। इस बीच फिल्म 'धूम 4' को लेकर एक और बड़ा अपडेट सामने आया। खबर है कि फिल्म 'धूम 4' इस बार विक्की कौशल की एंट्री हो गई। विक्की कौशल फिल्म 'धूम 4' में एक पुलिसवाले का किरदार निभाने वाले हैं।

विक्की कौशल ने फिल्म 'धूम 4' को लेकर हाल ही में आदित्य चोपड़ा से मुलाकात की है। इस दौरान विक्की कौशल ने एक और प्रोजेक्ट पर डिस्कशन किया है। बताया जा रहा है कि फिल्म 'धूम 4' के अलावा विक्की कौशल वाईआरएफ स्पाय यूनिवर्स का हिस्सा बनने वाले हैं। इस फिल्म में विक्की कौशल लीड रोल प्ले करते नजर आएंगे। बताया गया विक्की कौशल फिल्म 'धूम 4' में अभिषेक बच्चन को रिप्लेस कर सकते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि इस बार 'धूम-4' में अभिषेक बच्चन नहीं नजर आ सकते हैं।

फिल्म में विक्की कौशल भी पुलिसवाला बनकर चोर पुलिस का खेल खेलते नजर आएंगे। इस खबर ने फिल्म 'धूम 4' और विक्की कौशल के फैंस का उत्साह सातवें आसमान पर पहुंचा दिया। हालांकि मेकर्स ने अब तक भी इस खबर पर अधिकारिक बयान नहीं दिया। ऐसे में फिल्म 'धूम 4' को लेकर कोई भी कयास लगाना जल्दबाजी होगी। गौरतलब है कि विक्की कौशल के सितारे इस समय बुलंदियों पर चल रहे हैं। विक्की कौशल की फिल्म बैड न्यूज ने पिछले साल कमाल दिखा दिया था। 2025 में विक्की कौशल फिल्म 'छावा' में नजर आने वाले हैं। ऐसे में विक्की कौशल का धूम 4 में आना फैंस के लिए किसी तोहफे से कम नहीं है।

इस दिन रिलीज होगी 'सन ऑफ़ सरदार-2'

अजय देवगन स्टारर साल 2012 में रिलीज हुई फिल्म 'सन ऑफ सरदार' ने दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ ही खूब हंसाया भी था। इस फिल्म में अजय के साथ सोनाक्षी सिन्हा नजर आई थीं। ऐसे में दर्शक इस फिल्म के सीक्वल का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। हालांकि, दर्शकों का ये इंतजार जल्द ही खत्म होने वाला है। अजय देवगन इस 'सन ऑफ सरदार 2' के साथ एक बार फिर से सिनेमाघरों में धमाल मचाने के लिए तैयार हैं। जल्द ही यह मूवी थिएटर में दस्तक देने वाली है, क्योंकि इसकी रिलीज डेट से पर्दा उठ चुका है।

ट्रेड एनालिस्ट तरण आदर्श ने 'सन ऑफ सरदार 2' की रिलीज से डेट से पर्दा उठाते हुए सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर किया है। तरण ने अपनी पोस्ट में लिखा कि अजय देवगन की 'सन ऑफ सरदार 2' की रिलीज डेट लॉक हो गई। 25 जुलाई 2025 को यह फिल्म रिलीज होगी, जो साल 2012 में आई 'सन ऑफ सरदार' की सीक्वल है। अजय देवगन और मृणाल ठाकुर स्टारर फिल्म का निर्देशन विजय कुमार अरोड़ा ने किया है। उन्होंने अपनी पोस्ट में आगे बताते हुए लिखा कि जी स्टूडियो और देवगन फिल्म द्वारा प्रस्तुत 'सन ऑफ सरदार 2' का निर्माण अजय देवगन, ज्योति देशपांडे, एनआर पचीसिया और प्रवीण तलरेजा ने किया है।

कुमार मंगत पाठक सह-निर्माता हैं। बॉलीवुड की मच अवेटेड फिल्मों से एक 'सन ऑफ सरदार 2' में अजय देवगन के साथ एक्ट्रेस मृणाल ठाकुर लीड रोल में नजर आएंगी। वहीं इनके फैंस को दोनों के बीच रोमांस का तड़का भी देखने को मिलेगा। इस फिल्म की शूटिंग इन दिनों लंदन में चल रही है। वहीं जैसे ही इस फिल्म की रिलीज डेट की अनाउंसमेंट हुई वैसे ही फैंस खुशी से झूम उठे।

रियल बॉक्स

समय बदला उसके साथ सिनेमा भी बदला

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

कहा जाता है कि जब समय बदलता है, तो उसके साथ बहुत कुछ बदलता है। लोगों की जीवन शैली, उनका सोच और तकनीकी क्षमता के अलावा मनोरंजन के तरीके में भी बदलाव आता है। इसके साथ ही सिनेमा में भी बदलाव आता है। सिनेमा में भी अपनी शुरुआत से अभी तक के सौ सालों के दौरान बहुत कुछ बदला। समय, काल, परिस्थितियों के साथ देश ने बरसों की गुलामी के बाद आजादी देखी थी। इस दौरान फ़िल्में श्वेत-श्याम से रंगीन हो गई! सिनेमा के निर्माण की प्रक्रिया, कलाकारों का अभिनय, नए जमाने के कथानकों के साथ फिल्म संगीत में भी क्रांति आ गई! फिर भी दर्शकों में अभी तक संतुष्टि का वो भाव नहीं आया, जो इतने सालों में आना था। निर्माण की बेहतरी के साथ फिल्मों से कमाई बढ़ी, पर दर्शक संतुष्ट नहीं है! उसे लगता है कि कहीं कोई कमी तो है! यही कारण है कि कई फ़िल्में जोरदार प्रचार और नामी कलाकारों के बाद भी दर्शकों के दिल को नहीं छू पाती! जबकि, कुछ ऐसी फिल्मों को दर्शक पसंद करते हैं, जिनके बारे में पहले से अनुमान नहीं लगाया जाता! ऐसे में सवाल उठता है कि सौ साल से ज्यादा लम्बे इतिहास में क्या कोई ऐसा दौर आया, जिसे सिनेमा का स्वर्णिम काल कहा जाए! इस सवाल के निश्चित रूप से अलग-अलग जवाब हो सकते हैं! क्योंकि, दर्शकों की रूचि भी एक सी नहीं होती! फिर इस सवाल का सही जवाब यही है, कि जिस समयकाल में कालजयी फ़िल्में ज्यादा बनी, वही स्वर्णिम दौर कहा जाएगा!

सिनेमा की शुरुआत के बाद करीब चार दशक से ज्यादा समय देश की गुलामी का समय था! कई घोषित और अघोषित बंदिशें थीं। फिल्मकारों के लिए निर्माण के आधुनिक संसाधन जुटाना भी आसान नहीं था। फिल्म की ज्यादातर कहानियां भी धार्मिक कथाओं और राजा की कथाओं तक केंद्रित थीं। सामाजिक बेड़ियों के कारण लम्बे समय तक महिला कलाकारों का फिल्मों में काम करना संभव नहीं हुआ! धीरे-धीरे हालात सामान्य हुए। आजादी के बाद सिनेमा ने भी करवट ली! ये वो दौर था, जब देश आजाद था और सामाजिक सोच बदल रहा था! फिल्मकारों के सामने भी नई कहानियों के विकल्प थे। इसलिए कहा जा सकता है कि 1951 से 1960 का दशक हिंदी सिनेमा का सबसे बेहतरीन युग था। इन दस सालों में बहुत कुछ ऐसा हुआ, जो बीते चार दशकों में नहीं हुआ और न बाद के सात दशकों में! इस समय को बेहतरीन इसलिए कहा जा सकता है, कि इस दौरान मुगले आजम, मदर इंडिया, प्यासा, कागज के फूल, दो बीघा जमीन, आवारा और 'दो आंखें बारह हाथ' जैसी कालजयी फ़िल्में बनी। ये वो फ़िल्में थीं, जो निर्माण, कथानक और अभिनय सभी में बेजोड़ थीं। आज भी इन फिल्मों को श्रेष्ठता के मामले में मील का पत्थर माना जाता है। संगीतकार नौशाद, शंकर जयकिशन और एसडी बर्मन और गायक, गायिकाएं लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, आशा भोसले, किशोर कुमार और मुकेश की मखमली आवाज भी इसी स्वर्णिम काल की देन है।

इसे हिंदी फिल्मों का आदर्शवादी दौर भी कहा जाता है। इस दौर का नायक प्यार करने में तो पीछे नहीं था! पर, परिवार के दबाव, सामाजिक प्रतिष्ठा और प्रतिबद्धता के आगे वो प्यार की कुर्बानी देने में भी पीछे नहीं हटा! आवारा, मदर इंडिया, जागते रहो, श्री 420, झाँसी की रानी, परिणीता, बिराज बहू, यहूदी, बैजू बावरा और 'जागृति' जैसी फिल्में इसी समय में बनी। ये गुरुदत्त, बिमल राय, राज कपूर, महबूब खान, दिलीप कुमार, चेतन आनंद, देव आनंद और ख्वाजा अहमद अब्बास का समय था। राज कपूर जैसे अनोखे फ़िल्मकार ने भी इसी दशक में फिल्म निर्माण और निर्देशन की शुरुआत की। यह कहना गलत नहीं होगा कि सिनेमा के नायक को असली ताकत भी इसी दशक में मिली। आजादी के बाद देश का सोच भी आकार ले रहा था,

इसलिए ये समाज के आदर्शवाद का भी समय था। फिल्मकारों ने समस्या प्रधान फिल्मों की तरफ भी रुख किया और सामाजिक भेदभाव, जातिवाद, भ्रष्टाचार, गरीबी, फासीवाद और सांप्रदायिकता के खिलाफ फिल्में बनाई। सिनेमा के परदे पर वे सारे सपने नजर आने लगे, जो आजाद देश के आदर्श समाज के लिए देखे गए थे। बिमल रॉय की फिल्म 'दो बीघा जमीन' ऐसे ही सपनों की फ़िल्म थी। ये फिल्म राष्ट विकास के मॉडल और उसके बीच समाज के दो वर्गों के बीच सांठगांठ को सामने लाने वाली थी। इस फिल्म का नायक कर्ज की रकम चुकाने के लिए रोजगार की तलाश में गांव से कलकत्ता जाता है। कहा जाता है कि आधुनिकता ही समृद्धि लाती है।

प्रेम में पगी कालजयी फिल्मों की बात की जाए तो बिमल रॉय ने 'देवदास' और गुरुदत्त ने 'प्यासा' बनाकर इसकी शुरुआत की! लेकिन, फिर भी इस दशक में प्रेम प्रधान फिल्मों का अभाव देखा गया। क्योंकि, इस समय में सामाजिक बंधन, मर्यादा और नैतिकता का जोर ज्यादा था। 1951 में बनी राज कपूर की 'आवारा' हिट साबित हुई। 'आन' और 'चोरी-चोरी' भी ऐसी फ़िल्में थीं, जो आज भी याद की जाती है। 1954 में वी शांताराम की 'झनक झनक पायल बाजे' भी पसंद की गई। हिंदी की कई श्रेष्ठ फिल्में इसी दौर की देन रही। फिल्मों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों की शुरुआत भी इसी दशक में 1954 से हुई। अभिनेता देवानंद की 'सीआईडी' और 'फंटूश' इसी समय की सफल फ़िल्में थीं। 1957 में आई महबूब खान की 'मदर इंडिया' ने तो इतिहास बना दिया। ये इस दशक की सबसे ज्यादा कमाई वाली फिल्म तो थी, ऑस्कर के लिए विदेशी भाषा श्रेणी में भारत की तरफ नामित होने वाली भी पहली फिल्म बनी। हिंदी सिनेमा का ये महत्वपूर्ण पड़ाव था। दिलीप कुमार और वैजयंतीमाला की 'नया दौर' भी इसी दशक में आई! 1957 में रिलीज हुई गुरुदत्त की 'प्यासा' भी कालजयी फिल्मों में एक थी। इस फ़िल्म को तो 'टाइम' पत्रिका ने दुनिया की 100 श्रेष्ठ फिल्मों में शामिल किया है। दो आंखें बारह हाथ, पेइंग गेस्ट, मधुमती, चलती का नाम गाड़ी, फागुन, हावड़ा ब्रिज, दिल्ली का ठग, अनाड़ी, पैगाम, नवरंग और 'धूल का फूल' जैसी फिल्में भी इस दशक की फेहरिस्त में हैं।

बलराज साहनी, अशोक कुमार और शम्मी कपूर की फिल्मों को जबरदस्त सफलता मिली। वहीं सत्यजीत रॉय, विमल राय, गुरुदत्त, महबूब खान, वी शांताराम, के आसिफ, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे महान फिल्मकारों ने भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाई। साथ ही यश चोपड़ा, मनमोहन देसाई, विजय आनंद, ऋषिकेश मुखर्जी, शक्ति सामंत जैसे फिल्मकारो ने इसी दशक में सिनेमा की दुनिया में कदम रखा। फिल्मों में बरसों तक अपनी अदाओं से दर्शकों को हंसने के लिए मजबूर करने वाले जॉनी वॉकर, महमूद, आईएस जौहर, किशोर कुमार, भगवान दादा, मुकरी, गोप जैसे कलाकारों ने भी इसी काल में मनोरंजन की दुनिया में कदम रखा। अपनी खलनायकी से दर्शकों के रोंगटे खड़े कर देने वाले प्राण, केएन सिंह, जीवन, कन्हैया लाल और मदनपुरी भी परदे पर दिखाई दिए।

इसी समय 'काली घटा' से बीना राय ने अपने फिल्म करियर की शुरुआत की और बाद में प्रेमनाथ की पत्नी बनी। लता मंगेशकर और आशा भोंसले ने फिल्म 'दामन' के लिए पहली बार युगल गीत 'ये रुकी रुकी हवाएं, ये बुझे-बुझे सितारे' गीत गाया। 1951 मे प्रर्दशित आवारा के गीत 'घर आया मेरा परदेसी' में राजकपूर और नरगिस पर पहला स्वप्न दृश्य फिल्माया गया था। राज कपूर ने प्रेम के जिस फ़िल्मी चलन की शुरूात की, वह अपने पूरे शबाब पर आया। 1960 में आई ऐतिहासिक फिल्म 'मुगले आजम' आज भी बेहतरीन फिल्मों में गिनी जाती है। 'मुगले आजम' 5 अगस्त 1960 को देश के डेढ़ सौ सिनेमाघरों में एक साथ लगने वाली पहली हिंदी फ़िल्म थी। बरसात की रात, कोहिनूर, चौदहवीं का चांद, जिस देश में गंगा बहती है, दिल अपना और प्रीत पराई जैसी फिल्मों ने भी बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कारोबार किया। 1961 में आई 'जंगली' से शम्मी कपूर स्टार बने और सायरा बानो ने पहली बार परदे पर कदम रखा। इसके बाद के दौर में फिल्मों का दृष्टिकोण यथार्थपरक हो गया। बाद के दशक में फिल्मों के साथ दर्शकों का सोच भी यथार्थ की तरफ दौड़ने के साथ रंगीन हो गया!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सिनेमा की आग जगाए दर्शकों के जज्बात

अशोक जोशी

हाल ही में हॉलीवुड के केन्द्र लॉस एंजिलिस में लगी भयावह आग ने न केवल इस क्षेत्र में तबाही का मंजर खड़ा कर किया, बल्कि हॉलीवुड के कई दिग्गज सितारों के आशियनों को भी जलाकर खाक कर दिया। यह पहला मौका नहीं हैं, जब मौके-बेमौके लगी आग ने सितारों को बरबाद किया है।

कुछ साल पहले राज कपूर के चेम्बूर स्थित आरके स्टूडियो में लगी आग ने पूरा स्टूडियो राख में बदल दिया था। यही कारण है कि कपूर खानदान ने अपने परिवार की इस अनमोल निशानी को गोदरेज के हाथों बेच दिया जो अब फिल्मों की शूटिंग का ठिकाना नहीं, बल्कि रईस लोगों के रहने का आशियाना बनकर रह जाएगा।

फिल्मों और फिल्मों से जुड़े लोगों को आग ने जाने-अनजाने कई बार प्रभावित किया है। इनसे सिर्फ कलाकार ही नहीं, फिल्मकारों पर भी असर आया। 'मदर इंडिया' के सेट पर लगी जानलेवा आग में यदि सुनील दत्त यदि नर्गिस को नहीं बचाते, तो यह सबसे बड़ा हादसा होता। लेकिन इस आग से बचकर नर्गिस ने विवाह के हवन कुण्ड की आग के सामने सुनील दत्त को अपना जीवन साथी बना लिया। लेकिन, यही आग फिल्म अभिनेता और निर्माता निर्देशक संजय खान के लिए उतनी मेहरबान नहीं रहीं। उनके महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट 'टीपू सुल्तान' के सेट पर लगी आग ने न केवल सेट को राख में बदल दिया और कुछ क्रू मेंबर्स की जान ले ली। संजय खान को भी लगभग सत्तर प्रतिशत तक जला दिया, जिससे उनका बच निकलना किसी चमत्कार से कम नहीं रहा।

यह आग फिल्मी स्टूडियो और फिल्मकारों के लिए भी घातक साबित हुई। कई बार सिनेमाघरों में लगी आग ने मनोरंजन के लिए आए दर्शकों को घर के बजाए चिता की आग में सौंप दिया। दिल्ली के उपहार सिनेमा का हादसा आज भी रोंगटे खड़े कर देता है। इंदौर में 'जूली' फिल्म के दौरान एलोरा टॉकीज में लगी आग ने न केवल फिल्म की प्रिंट को नष्ट कर दिया, बल्कि सिनेमाघर को भी कई महिनों तक दर्शकों से महरूम रखा। यहीं बंद पड़े रीगल सिनेमा में बार-बार आग लगने का कारण कोई जान नहीं पाया।

बीआर चोपड़ा की फिल्म 'द बर्निंग ट्रेन' के निर्माण के दौरान भी यही आग कई गुल खिला चुकी है! फिल्म डिविजन, सेंसर बोर्ड और फेमस स्टूडियो के गोदामों में लगी आग ने भी कई फिल्मों की नेगेटिव को हमेशा के लिए नष्ट कर दिया। एक घटना तो यह भी है, कि अपनी पत्नी गीता बाली की असमय मौत से शम्मी कपूर ने आपा खोकर उनकी फिल्म 'रानो' की निगेटिव को अपने हाथों से आग के हवाले कर दिया था।

लगता कि कपूर खानदान और आग का चोली दामन का साथ है। राज कपूर ने अपने निर्देशन में बनी पहली फिल्म का नाम ही 'आग' रखा था। इसी के महिला संस्करण 'सत्यम शिवम सुंदरम' की नायिका को भी राज कपूर ने आग से बदसूरत बनाया था। उनकी ज्यादातर फिल्मों के गीतों में कहीं न कहीं आग के बोल सुनने में आ ही जाते हैं। आग के गीत 'जिन्दा हूँ इस तरह में' जलता हुआ दिया हूं मगर रोशनी नहीं के सुर सुनाई दिए तो अगली ही फिल्म 'बरसात' के शीर्षक गीत 'बरसात में हमसे मिले तुम' में एक जगह हताश होकर नायिका कहती है आग की लपटो में पुकारे ये मेरा गम मिल न सके हाय मिल न सके हम। 'आवारा' के प्रसिद्ध स्वप्न गीत में मन्ना डे की आवाज चीख चीखकर कहती है 'जिंदगी की आग में जिंदा जल रहा हूं, में मुझको प्रीत चाहिए मुझको चाहिए बहार' तो दूसरे गीत में मुकेश कहते हैं 'यह दिल जो जला एक आग उठी।'

आग से राजकपूर का नाता यही समाप्त नहीं हुआ। जिस देश में गंगा बहती है में एक ढेर सारे गायकों वाले गीत का आगाज ही आग से करते हुए प्राण से गवातें हैं 'हे आग हमारे सीने में हम आग से खेलते जाते हैं।' फिल्म 'संगम' के त्रिकोणात्मक गीत में वह फरमाते हैं 'जिस महफिल में शमा हो परवाना जाएगा दीवाना सैकड़ों में पहचाना जाएगा।' जोकर में एक गीत है 'गोरे मुखड़े पर चमके बिजुरिया कहीं आग न लग जाए!' जोकर की आग में झुलसने के बाद राजकपूर ने अपनी आगामी फिल्मों में आग से परहेज ही किया और 'सत्यम शिवम सुंदरम' में आग के दृश्य और कथानक थे, लेकिन गीतों में फिर आग कहीं नहीं दिखाई दी।

राजकपूर अलावा दूसरे निर्माताओं ने अलग-अलग रूप में आग को फिल्मों में शामिल किया। इनमें बर्निंग ट्रेन तो आग पर ही आधारित थी। इसके अलावा कम ही फिल्मों में आग का भयावह रूप दिखाई दिया। हुआ तो बस इतना कि कई फिल्में ऐसी बनी जिनके शीर्षकों में आग की आंच दिखाई दी। इनमें राज कपूर के अलावा फिरोज खान की आग, आग ही आग, यह आग कब बुझेगी, आग का गोला, प्यार की आग, बिरहा की आग, आग और दाग, हवस की आग, कामाग्नि, अग्नि, अग्निपथ, शोले, राम गोपाल वर्मा के शोले, अंगार, अंगारे, शोला और शबनम, शमा परवाना, शमा, ज्वाला, ज्वाला डाकू, ज्योति बनी ज्वाला, ज्वालामुखी, माचिस, मीरा नायर की फायर द आग प्रमुख है। दिलीप कुमार की फिल्म 'आग का दरिया' बन नहीं पाई, वर्ना इस फेहरिस्त मे एक नाम और जुड़ जाता।

फिल्मी गीतों में भी आग या इससे जुड़े पर्यायों का जमकर उपयोग किया गया। आग दिल में लगी है मेरे पास तू न आ, प्यार की आग में तनबदन जल गया। लकड़ी जली कोयला बनी कोयला बनी आग, चिंगारी कोई भड़के, सावन के महिने में एक आग सी सीने में, हम भी तो आग में जलते रहे प्यार के शोलों पर चलते रहे, आग पानी में लगी, पानी में जले मेरा गोरा बदन, आग लगा के चले हो कहां, सावन जो अगन लगाए। कहीं आग लगे लग जाए, सावन में लग गई आग, आग से आग बुझा,दीये जलते हैं, जिया जले, राधा कैसे न जले, आग लगी तन में दिल को पड़ा थामना, शोला जो भड़के, जलते हैं जिसके लिए, कहीं दीप जले कही दिल, ये शमा तो जली, हम प्यार में जलने वालो को, दुनिया वालों से दूर जलने वालों से दूर, तू मेरी मे तेरा दुनिया जले तो जले और ये देखो जला घर किसी का जैसे दर्जनों गीत शामिल हैं।

निगाहें... तेरे चेहरे से हटाऊं... ऐसे!

प्रकाश पुरोहित

महा-प्रेम-कवि बिहारी की कविता का भावार्थ है- प्रेमिका को विश्वस्त सूत्रों से पता चलता है कि गांव का युवक उस शहर जा रहा है, जहां उसका प्रेमी काम के सिलसिले में जमा हुआ है। प्रेमिका यह बताने को बेताब है कि प्रेमी के विरह में कितनी दुबली होती जा रही है। इसलिए उस युवक से मिलती है और उसे चिट्ठी, जिसे उन दिनों प्रेम-पत्र कहने का रिवाज था, देती है और निवेदन करती है कि प्रेमी तक पहुंचा दे। उन दिनों अमानत में खयानत का आविष्कार नहीं हुआ होगा। प्रेमी शहर पहुंचता है और प्रेमी को चिट्ठी पकड़ा देता है। यह मान लिया जाना चाहिए कि उसने चिट्ठी खोल कर नहीं पढ़ी होगी!

सुबह का वक्त था, जब लेटर, प्रेमी को हेंडओवर किया गया था। जब शाम को युवक वापस आया तो क्या देखता है, प्रेमी तब भी हाथ में चिट्ठी लिए बांच रहा है। चूंकि वह चिट्ठी यानी लव-लेटर लेकर आया था तो उसका हक बनता है कि पूछ ले कि आखिर ऐसा क्या लिखा है और कितना लिखा है कि प्रेमी सुबह से शाम तक पढ़ता रहा और फिर भी चिट्ठी खत्म नहीं हुई। प्रेमी उसे चिट्ठी दे देता है कि 'खुद ही पढ़ लो।'

युवक यह देख कर हैरान है कि कागज पर तो एक भी शब्द नहीं लिखा है, फिर ये बंदा पढ़ क्या रहा था। जब प्रेम में कोरा कागज भी इतनी तल्लीनता से पढ़ा जा सकता है तो फिर यदि प्रेमिका ही सामने आ जाए तो कितने घंटे, दिन और महीने उसे टाप सकता है, अंदाज लगा लीजिए। शायद इसी बात को आगे बढ़ाते हुए आज के कवि ने लिखा होगा 'मेरे लिए तो बस यही पल हैं, हसीं बहार के, तुम सामने बैठी रहो, मैं गीत गाऊं प्यार के।' यह याद रखा जाना चाहिए कि आज की प्रेमिका ही कल की पत्नी होती है!

दूसरा नमूना, रामबोला की देर से शादी हुई और पत्नी ऐसी मिली कि चमक-चांदनी। हर समय उसके आगे-पीछे घूमने लगे। यहां तक कि एक बार जब अपने मायके गई तो रामबोला भी पीछे-पीछे पहुंच गए। रात का वक्त था और उन दिनों बिजली की खोज नहीं हो पाई थी तो दरवाजे पर कालबेल भी नहीं थी, इसलिए रामबोला घर की दीवार के पास खड़े थे कि अंदर कैसे जाएं। तभी उन्हें रस्सी नजर आई और रामबोला ने रस्सी पकड़ी और दीवार फांद ली। वह तो बाद में पता चला कि प्रेम में अंधे ने जिसे रस्सी समझा था, वह तो सांप था। उस जमाने में सांप भी अलग किस्म के होते होंगे, जिसने एक प्रेमी को दीवार पार ऐसे पहुंचा दिया, जैसे नाव से नदी पार कराता मल्लाह।

सांप के जरिए दीवार पार की थी, इसलिए या जासूसी के इरादे से ससुराल आए थे, इस वजह से पत्नी खूब नाराज हुई और रामबोला को ना जाने क्या-क्या बोल दिया कि फिर ऐसे गए कि लेखक बन गए और फिर कभी पत्नी के पीछे नहीं भागे!

ये दो नमूने इसलिए पेश किए हैं कि लार्सन एंड टुब्रो के चेयरमैन सुब्रमनियन ने जो हफ्ते में नब्बे (सच बताऊं, मुझे तो यही पता नहीं है कि हफ्ते में कुल कितने घंटे होते हैं) घंटे काम करने की बात कही है, उसका मर्म समझ सकें। उन्होंने यह कहा है कि संडे को पति-पत्नी आखिर कितनी देर एक-दूसरे को बर्दाश्त कर सकते हैं। शोध से पता चलता है कि पति-पत्नी में बेबनाव ज्यादातर सोमवार को ही जगजाहिर होता है, यानी तलाक और झगड़े या मनमुटाव की असली वजह रविवार की छुट्टी है। पत्नी तो रविवार को भी वही सब कर रही होती है, जो बाकी वार को करती है। उसे तो उस दिन भी छुट्टी नहीं मिलती कि चलो, हम एक-दूसरे को ताकें, टापें या निहारें!

अब पति तो रविवार की छुट्टी एंजॉय कर रहा है, यानी निठल्ला बैठा है तो सिवाय पत्नी को टापने के और क्या कर सकता है। देखता है कि पीठ पीछे घर के काम कैसे निपटाती है। दफ्तर में बॉस जिस तरह डपटते रहते हैं, वह भी हर काम में खोट निकालता है और सही तरीके बताता रहता है। सारी खटपट यहीं शुरू होती है। हफ्ते भर तो दफ्तर में पत्नी बना रहता है और एक दिन पति बनने की कोशिश में बेघर हो जाता है, इसलिए बेहतर यही है कि रविवार को भी काम करे, ताकि काम का तो क्या है, होता रहता है, घर बच जाएंगे। मुझे लगता है चेयरमैन साहब को चिंता कंपनी की नहीं, कर्मचारियों के घर बचाने की है, जिसे लोगों ने गलत एंगल दे दिया और नागरिक आजादी का सवाल बना दिया!

इस बात को ऐसे भी बेहतर समझ सकते हैं कि उन्होंने पति-पत्नी का नमूना दिया है। जानते हैं, प्रेम में तो रविवार क्या, कोई-सा भी वार हो, समान है और कम है, जबकि शादीशुदा जिंदगी में रविवार सही मायने में वार होकर रह जाता है, क्योंकि तब पत्नी को भी एकाधिकार की आदत हो जाती है। जब छह दिन उसका शासन है तो सातवें रोज किसी और का दखल कैसे और क्यों बर्दाश्त किया जाना चाहिए।

रविवार को काम की शर्त लागू हो जाए तो दावा है फैमिली कोर्ट के कर्मचारी भी हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। यह सिर्फ प्राइवेट कंपनियों पर ही नहीं, सरकारी दफ्तरों पर भी लागू होना चाहिए, क्योंकि यहां तो वैसे भी हर दिन रविवार ही होता है, यह अलग बात है कि दफ्तर को ही खाला के घर की तरह समझने लगते हैं।

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी
लेखक साहित्यकार हैं।

लहजा: बात करने के ढंग पर जरा गौर करें

जी हाँ, आज की लाइफ स्टाइल में इस शब्द 'लहजे' की महत्ता बहुत बढ़ गई है। अगर आप ज्ञानी ना भी हो तो भी आप अपने बात करने के ढंग या लहजे से लोगों के दिल जीत सकते हैं। यहाँ में स्पष्ट कर दूँ, लहजा अरेबिक शब्द है जिसका अर्थ है बात करने का ढंग। लहज़ा मतलब 'मोमेंट'। ये वही लहजा है जिससे आप को सुनकर लोग कह देते हैं, अरे! आप बिहार, उत्तर, नार्थ, अमेरिका, यू.एस. की तरफ के हैं। एक अर्थ में लहजे को हम ज़बान भी कह सकते हैं। मसलन, उसकी ज़बान बहुत अच्छी है, उच्चारण बहुत अच्छा है।

ये तो बात हुई लहजे की। लहजे से मैंने लोगों की दुनिया बदलते देखी है। आजकल सोशल मीडिया पर आपका लहजा आपको मशहूर बना देता है। रोज़मर्रा की ज़िंदगी में बहुत मुश्किल होती है। कई लोग बहुत अच्छे दिल के विचार वाले होते हैं पर उनका लहजा इतना बिगड़ा रहता है कि उनके बारे में लोग गलत राय बना लेते हैं। मेरी सहेली की सास बहुत अच्छी है और उसे बहुत प्रेम करती है पर जब वो उसे पुकारती है तो वो अंदर तक कांप जाती है। यहाँ मैं समझती हूँ जो दिल में है वो आपकी ज़ुबाँ पर भी होना चाहिये तभी तो शहद टपकेगा। हाँ कुछ लोग ज़ुबाँ और लहजे से ही प्रकट करते हैं, कि हमारे दिल में जो कड़वाहट है वही लहजे में है। अब मसलन मैं नज़्म लिखती हूँ और संवेदना, भावना से भरी लिखती हूँ तो मुझे उसे अलग लहजे में पढ़ना पड़ता है। हाँ ये बात सही है बातचीत में कई बार मेरा लहजा खराब हो जाता है जैसे मददगार को डांटते समय मेरा लहजा, नज़्म सुनाने जैसा नहीं हो सकता, पर अब मुझे लगता है नहीं, उसमें भी नम्र लहजा अपनाना चाहिये तो सब कहते हैं, तुम बेटा-बेटा करके उन्हें सर चढ़ा रही हो।

ऐसे ही हमारे एक व्यंग्यकार मित्र हैं बहुत अच्छा व्यंग्य लिखते हैं पर जब उन्होंने मेरी मुहब्बत की नज़्मों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। मैं हैरान रह गई उस वक्त और स्पीच देते वक्त भी उनका लहजा मुझे सादा, हंसी से भरा लगा। उन्होंने व्यंग्य अपनी ज़ुबाँ पर नहीं उतारा। वहीं दूसरे व्यंग्यकार मित्र हैं जिन्होंने पूरा जीवन व्यंग्य से भर लिया है। हर वक्त लहजे में तिलमिलाहट, चुभन महसूस होती है, चाहे फिर मित्र क्यों ना हो पर चूंकि ये सब व्यंग्य उनके जीवन में इतना घुलमिल गया है कि वो इसे गलत नहीं मानते तो वो व्यंग्य लिखते हैं, जीते हैं, बोलते भी हैं।

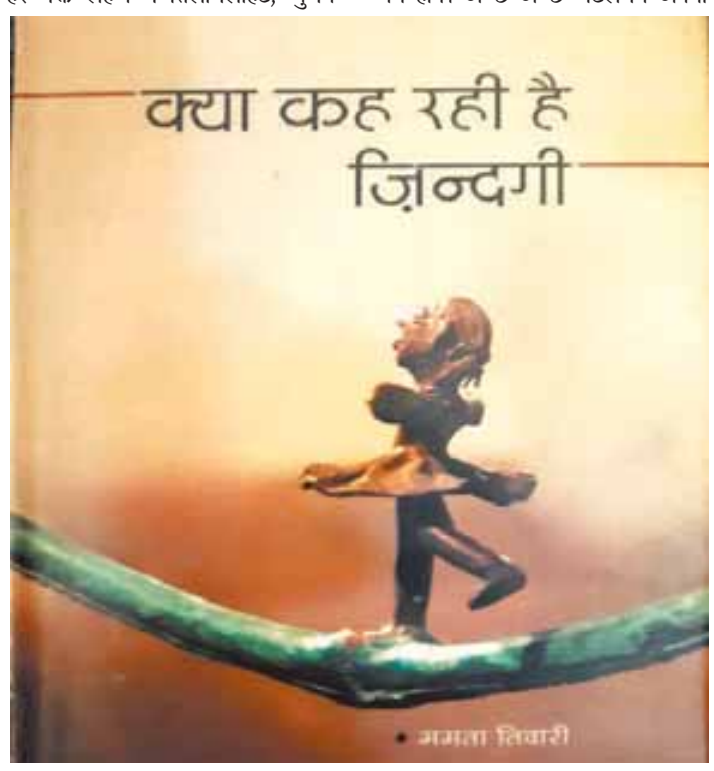

शुरूआत कैसे करें कि हमारा लहजा शुरू से ही बेहतर बने। इसके लिये पहला उत्तरदायित्व माता पिता का, दूसरा गुरू का, तीसरा समाज, संग साथ का। माता पिता को सर्वप्रथम अपने लहजे पर प्रैक्टिस करनी होगी, कमरा बंद करके लड़ना होगा, बहुधा औरतें पति या ससुराल का गुस्सा अपने बच्चों पर गलत लहजे में चिल्ला कर उतारती हैं। मेरे रिश्तेदार की बिटिया अपनी गुड़िया से खेलते खेलते कह रही थी तेरे माँ बाप ने तुझे ये ही सिखा कर भेजा था और एक भद्दी गाली दी। मैंने उससे पूछा तो उसने कहा दादी भी तो माँ से ऐसे ही बोलती है। वहीं उसका भाई और वो 'पापा मम्मी' खेल रहे थे और पापा नाम का लड़का मम्मी से मार पीट करता है। अनाप शनाप लहजे में बात कर रहा था आप समझ ही गये होंगे। अच्छे अच्छे जैंटलमैन अपनी पत्नियों से अलग लहजे में बात करते हैं।

अब आती है बात शिक्षकों की। क्या उन्हें कड़क लहजा ही अपनाना होगा? मेरे ख़्याल से उन्हें शिक्षक का ओहदा देने से पहले उनका लहजा सुधारने की ट्रेनिंग देनी होगी, मसलन माँ को शादी से पहले अपने सुपुत्रों को बताना होगा कि जिस अच्छे लहजे में तुम मुझसे, पापा बहन से बात करते हो वैसे ही अपनी पत्नी से भी करना होगा। यही बात पत्नी की माँ को बतानी होगी। देखिये हमें कोई टीचर बहुत प्रिय होती है और कोई से बहुत डर लगता है। वजह वही लहजा, मीठा बोलने वाली टीचर हमारे दिल को छूती है। हमें लगता है हम बहुत सी बातें शेअर करें। आप अक्सर देखते हैं हम हमारे अपनों से बातें शेअर नहीं कर पाते क्योंकि छूटते ही उनका कहना होता है हमें तो पहले ही पता था तुम्हारे दिमाग में क्या आलतू-फालतू भरा है। इस तरह लोग सिर्फ गलत लहजे के कारण आप से बातें शेअर करना बंद कर देते है।

हाँ, समाज और संग का हम कुछ नहीं कर सकते क्योंकि वो हमारे हाथ में नहीं है तो हमें घर में बच्चों को लहजे में ऐसी मजबूती प्रदान करें कि वो संगी साथियों के बीच अपनी भाषा और लहजा कायम रखें क्योंकि स्कूल के बाद हॉस्टल में उनकी दुनिया दूसरी ही होती है। यू ट्यूब, ई मेल पर दूसरी होती है। स्टैंड अप कॉमेडी में जो जितना गाली गलौज वाले लहजे में बोलेगा वो उतना ही सुपरहिट होगा। एक बार में ऐसे ही कार्यक्रम में फंस गई मन हुआ पूछूं कि जो लहजा और भाषा तुम यहाँ दूसरों के माँ बाप के सामने बोल रहे हो वैसा ही लहजा अपने माँ बाप के सामने रखते हो। 'ये उसका प्रोफेशन है' सोच कर माँ बाप खुद को समझा लेते हैं। तो कुल मिला कर मैंने महसूस किया हम हर समय इस यात्रा में लहजा सुधारने के लिये परिवारजनों के पीछे नहीं पड़ सकते हैं तो नीव में लहजे की मजबूत ईंट रखिये और इत्मीनान रखिये वो इसे फॉलो करेंगे। आखिर फोन पर, बॉस, माता पिता, शिक्षक बाहर वालों के सामने आपका लहजा कितना खूबसूरत होता है, मुस्कुराती हुई नकली सेल्फी की तरह। अपने आप को वैसा ही बनाइये जैसा दूसरों के समक्ष बोलते हैं, जैसा सेल्फी में दिखाते हैं और बिल्कुल नेचरल मुस्कान और लहजे के साथ पूछिये सुबह सवेरे सबसे और क्या कह रही है ज़िंदगी?

लोग हैं तो बातें तो होंगी ही
माना लहजों की चोट से लोग मरते नहीं
पर कड़वे लहजों के ज़ख्म भी तो भरते नहीं
लोग हैं तो बातें तो होंगी ही।
बातों की बढ़ती खुमारी, बनाती है हस्ती हमारी
लहजे से डसती है ज़ुबाँ अक्सर तुम्हारी
लोग हैं तो बातें तो होंगी ही।

जीवन अनुभव

टू फॉर ज्वाय, वन फॉर सारो

वर्ष 2010 में मैं पदोन्नति के तहत मंदसौर जिले की सुवासरा तहसील के धामनिया नामक गांव गया। जब शहर के किसी बड़े स्कूल से छोटे गांव में जाने को लोग अपना दुर्भाग्य मानते हैं, न इसमें किसी प्रकार का आर्थिक लाभ था। फिर भी न जाने क्यों मेरे मन ज्वाइन करने का विचार आया। पहली बार जब स्कूल गया तो वहां भूमि में न जाने क्या खिंचाव था कि मैं वहां से जुड़ गया। स्कूल के ठीक सामने तालाब और पीछे हरे भरे खेत। तालाब भी ज्यादा बड़ा नहीं किंतु उसकी पूर्वी पाल पर एक देवस्थान होने के कारण कुछ ऐसी परंपरा है कि उसपर लगे वृक्षों को कोई काटता नहीं था। यहां तक कि नीचे गिरी लकड़ी को कोई उठाता नहीं था। इस कारण इसका पूर्वी तट उत्तर से दक्षिण तक विशाल वृक्षों से ढंका था। पानी और पेड़ का गठबंधन पक्षियों के लिए बड़ी सुदृढ़ इकोलोजी बनाता है। इस कारण कई पक्षियों से रुबरु होने का सौभाग्य मिला। मैं विद्यालय की अर्द्ध विश्रांति के समय ऑफिस में बैठने की बजाय तालाब के किनारे कैमरा लिए कुर्सी लगा कर बैठता था। पक्षियों ने मेरे मन में इतनी जिज्ञासा पैदा की कि डॉक्टर सालिम अली की पुस्तक 'भारत के पक्षी' मंगवाई। मैं पक्षियों के फोटो लैपटाप पर बच्चों दिखाता। बच्चों ने उनके घोंसले खोज कर मुझे दिखाए। यह क्रम जब तक रिटायर हुआ तब तक चला। 41 वर्ष के सेवाकाल मेरा यह अंतिम समय बहुत स्वर्णिम और उपलब्धि भरा रहा। इसी बीच कुछ घटनाएं ऐसी भी हुई जिनसे में आहत हुआ हूं। उनका स्मरण कर आज भी सजल हो जाता हूं। एक दिन उसी तालाब में दो विशाल पक्षी दिखे जिसे हम सारस कहते हैं। यह उत्तरप्रदेश का राज्यपक्षी है तथा इसकी संख्या निरंतर कम हो रही है प्राकृतिक कारण तो कई है पर एक कारण यह भी है कि ये स्थायी रुप से जोड़े में रहते हैं। इनमें से एक भी अगर मर जाता है तो दूसरा साथी इस विरह को स्वीकार न करते हुए ज्यादा जीवित नहीं रह पात है। सारस के जोड़े को देख मेरी फोटोग्राफी और सक्रिय हो गई। उनके कई फोटो मैंने लिए तथा उनकी आदतों का निरीक्षण किया। पेड़ को ओट से नजदीक के चित्र भी लिए। कैमरे में लेंस के कारण जूम कर पाने से काम में सरलता हो रही थी। सब ठीक चल रहा था पक्षियों चंचलता उनका नृत्य सभी आनंदित कर रहा था।

बाद में जब हमेशा की तरह स्कूल आया पर सारस का वह जोड़ा नहीं दिखा मन व्याकुल था। मैंने सोचा कि संभवतः उन्होंने स्थान बदल लिया होगा। लगभग आठ दस दिन बाद एक अकेला सारस दिखा बहुत उदास सा, न उसमें पहले की तरह गति थी, न चंचलता। वह? नर था या मादा मुझे पता नहीं। मैं विशेषज्ञ तो नहीं थ। पर उनके विरह पीड़ा को पक्षी में स्पष्ट देख रहा था। मैं उस दिन अपना टिफिन नहीं खोल पाया। दूसरा शिकार हुआ या सहज मरा पता नहीं। पर आंखों के सामने करुणा का सागर बह रहा था। किसी पुस्तक में एक वाक्य पढ़ा था- टू फॉर ज्वाय, वन फॉर सारो।

आदि कवि वाल्मिकी का वह करुणाभरा श्राप महाकाव्य में बदल गया इसमें कतई आश्चर्य नहीं। आज मेरे संग्रह में उस जोड़े के अनेक चित्र है। वर्ष 2015 में जैव-विविधता बोर्ड से मेरा सारस के जोडे फोटो पुरुस्कृत हुआ तो आंखें और सजल हुई। किसी ने लिखा यदि प्रकृति में मनुष्य नहीं होता तो प्रकृति कितनी सुंदर और सम्पन्न होती।

फोटो और विवरण: बंसीलाल परमार

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'
लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

नन्हे नन्हे से कदम उठाओ : वन स्टेप एट ए टाइम

आज वो सुबह से ही पान की दुकान पर उदास बैठा था। चेहरे पर ऐसे भाव मानो सब कुछ लुटा आया हो। बहुत पूछने पर उसने बताया कि ये आने वाला साल 2025 पूरा बेकार चला गया। मैं आश्चर्य में था कि जो साल अभी ठीक से शुरू भी नहीं हुआ है वो भला पूरा बेकार कैसे चला जा सकता है। मुझे लगा कि शायद 2024 की बात कर रहा है।

तब उसने बताया कि बेकार तो 2024 भी चला गया था मगर वो दीगर कारणों से बेकार हुआ था। पिछले साल तो खैर हमारा ही दोष था।

दरअसल वो हर साल पहले 15 दिन मनन चिंतन करके एक सूची तैयार करता है कि इस साल उसे क्या क्या करना है। उसके इस साल के क्या गोल है। उन्हें वह किस तरह प्राप्त करेगा। कुछ लोग इसे न्यू ईयर रेजेल्यूशन का नाम भी देते हैं मगर उसका सदा से मानना रहा है कि साल शुरू होने के 15 दिन बाद जब साल न्यू नहीं रह जाता तो साल के साथ साथ न्यू ईयर रेजेल्यूशन भी पुराना हो जाता है। पुरानी चीजों से फिर भला कैसा लगाव। इसीलिए न्यू ईयर रेजेल्यूशन 15 दिन में ही खत्म हो जाते हैं। इसी के चलते वो उनको गोल पुकारता है। वो उनको न्यू ईयर के ही पहले 15 दिनों में बनाता है ताकि इस साल की बात इस साल में ही रहे तो पुरानी नहीं पड़ती। ये तरीका उसने एक अखबार में छपे आलेख 'सफलता की कुंजी' में पढ़ा था 4-5 साल पहले। उसी में लिखा था कि जब भी गोल बनाओ तो पूरा मनन चिंतन करके बनाओ और उसे लिखो। मन ही मन में गोल बना लेने से थोड़े दिन में वो दिमाग से भी गोल हो जाते हैं। ऐसे में जो चीज याद ही नहीं वो क्या खाक पूरी होगी। साथ ही यह समझाईश भी दी गई थी कि नन्हे नन्हे से कदम उठाओ ङ्क वन स्टेप एट ए टाइम। एक साथ लंबी छलांग लगाओगे तो मुंह के बल गिरोगे धड़ाम से।

बात समझ में आ गई अतः पहले वर्ष तो मात्र एक डायरी और पैन ही खरीदा -कुछ मनन भी किया लेकिन लिखने वाला बड़ा स्टेप अगले साल उठायेंगे सोच कर मामला अगले साल पर सरक गया। खुशी इस बात की थी कुछ मनन तो हो ही गया और गोल लिखने के लिए डायरी और पैन भी ले आए- इसके पहले तो जीवन में इतना भी नहीं किया था।

उसके अगले बरस मनन भी किया, चिंतन भी किया और गोल भी लिखे ङ्क यह अपने आप में बड़ी विजय थी उन नन्हें नन्हें से उठते कदमों की। गोल पूरा करने को अगले बरस का नन्हा कदम मान कर डायरी ताले में रख दी गई। चौथा साल याने कि 2024 में मनन चिंतन भी किया और एकदम स्पष्ट गोल भी लिख गए जैसे कि हफ्ते में तीन दिन सुबह 5 बजे उठकर जिम जायेंगे और 20 किलो वजन घटाएंगे, जिम से आते ही नहा धोकर हेल्थी नाश्ता करके 1 घंटा नियम से साल भर में 12 किताबें पढ़ेंगे, पीना पिलाना भी तभी जब खास दोस्त मिल जाएं वो भी लिमिट में और ऐसे ही दो एक गोल और। जिम ज्वाइन कर लिया। किताबें भी ले आए मगर बस, खास दोस्त रोज मिल जाते और लिमिट तो खुद की बनाई हुई -तो न तो सुबह सुबह आँख ही खुलती जिम जाने के लिए और जब जिम गए ही नहीं तो लौटते कहाँ से किताब पढ़ने के लिए। कहते हैं इमारत का एक स्तम्भ गिर जाए तो सारी इमारत भरभरा ढह जाती सो ही उसके साथ हुआ। सारे गोल गोलमोल होकर रह गए। तभी उसने ठान लिया था कि 2025 को तो साध कर ही रहूँगा। 4 साल सरकाते हुए 5 वें साल में तो सरकार भी कुछ न कुछ साध ही लेती है चुनाव में दिखाने के लिए।

2025 आया। मनन हुआ, चिंतन हुआ, डायरी में नए नए गोल लिखे गए। पूरी रूपरेखा तैयार हो गई। कल शाम को जाकर जिम भी ज्वाइन कर आए थे। हर नन्हें कदम के साथ डायरी में सही का निशान भी लगाते जा रहे थे कि ये स्टेप हो गया अब अगला स्टेप लेना है। जिम ज्वाइन करके जब साइकिल से घर लौट रहे थे तब रास्ते में कहीं डायरी ही गिर गई। काफी खोजा मगर मिली नहीं।

अब साल के पहले 15 दिन तो आने से रहे इसीलिए मन खिन्न है और बता रहे हैं कि 2025 का साल ही बेकार चला गया। अब अगले साल ही देखेंगे।

हमने समझाया भी कि हादसा तो बड़ा हुआ है मगर तुम ऐसा क्यूँ नहीं कर लेते कि पिछले साल की डायरी निकालो और जो गोल उसमें लिखे थे उनको ही पूरा कर डालो।

तब उसने आलेख की अंतिम लाइन, जिसमें की सफलता का सारा राज छिपा है, वह बतलाई कि 'अगर जिंदगी में सफल होना है तो पीछे मुड़कर कभी मत देखो। 'अब जो इंसान इतना क्लियर हो अपनी सोच में - उसे तो कोई क्या ही समझा सकता है।